हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2013 वर्ष 12 अंक 06

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

ईद मुबारक

हो मुबारक आपको ईदे सईद
होये राज़ी आप से रब्बे मजीद
लाए खुशियां साल का हर एक दिन
रब की उतरें रहमतें बरकत मज़ीद
ख़ल्क़ ये बेशक अ़ियालुल्लाह है
समझें नबी का कौल यह गर हैं रशीद
ख़ल्क़ की खिदमत रहे शेवा सदा
रब को राज़ी करने की है यह कलीद
रहमतें भेजो नबीये पाक पर
और मनाओ शौक से ईदे सईद

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
ईद मुबारक	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	8
मारक–ए–ईमान व माद्दीयत	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	11
ज़िक्र कुर्आन व हदीस की रौशनी में	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी रह0	16
सब्र व शुक्र मोमिन के विशिष्ट गुण	मौ0 मोहिबुल्लाह क़ासमी	21
स्वतंत्रता दिवस	इदारा	23
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	26
बच्चों के पालन–पोषण का तरीका	हाशमा अन्सारी	28
दुष्कर्म का उपचार	अब्दुल रशीद सिद्दीकी	30
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	31
प्रिय पाठकों की सेवा में	इदारा	35
सेहत के लिए लाभदायक है सौंफ	डॉ0 अनुराग श्रीवास्तव	38
लतीफे		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद :- और जब तक ईमान न लायें, मुश्रिक महिलाओं, से निकाह मत करो, और हाँ मुसलमान लौंडी बेहतर है मुश्रिक स्त्री से यद्यपि वह तुम को भली लगे और मुश्रिकों से निकाह मत करो जब तक वे ईमान न ले आएं और हाँ निश्चित रूप से मुसलमान गुलाम बेहतर है मुश्रिक से यद्यपि वह तुम को भला लगे[10] वे दोज़ख की ओर बुलाते हैं[11] और अल्लाह जन्नत और बख्शिश (गुनाहों की क्षमा) की ओर अपने आदेश से बुलाता है और अपने आदेश लोगों को बतलाता है ताकि वे नसीहत स्वीकार करें।[(221)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. पहले मुसलमान पुरुष और काफिर स्त्री और उसके विपरीत दोनों प्रकार से शादी की अनुमति थी इस आयत से उसको खत्म कर दिया गया। अगर पुरुष या स्त्री मुश्रिक हो तो उस की शादी मुसलमान से वैध नहीं या शादी के बाद एक मुश्रिक हो गया तो पिछला निकाह टूट जाएगा और शिर्क यह है कि ज्ञान या शक्ति या अल्लाह की किसी और सिफत में किसी को खुदा के समान समझे या खुदा के सामने किसी का सम्मान करने लगे मसलन किसी को सजदा करे या किसी को मुख़तार समझ कर उससे अपनी जरूरत का सवाल करे बाकी इतनी बात इसके अलावा आयात से मालूम हुई कि यहूदी व ईसाई स्त्रियों से मुसलमान पुरुष का विवाह सही है वह उन मुश्रिकीन में शामिल नहीं वह अपने दीन पर कायम हों नास्तिक और विधर्मी न हों जैसे ईसाई आजकल नजर आते हैं सारांश तमाम आयतों का यह है कि मुसलमान पुरुष को मुश्रिक महिला से विवाह करना ठीक नहीं जब तक वह मुसलमान न हो जाये निःसंदेह मुसलमान लौंडी काफिर स्त्री से बेहतर है यद्यपि वह स्वतन्त्र बीवी ही क्यों न हो अगरचे यद्यपि मुश्रिक बीवी अपने माल और खूबसूरती और सज्जनता के तुम को पसन्द आये और ऐसे ही मुसलमान स्त्री का विवाह मुश्रिक पुरुष से न करो, मुसलमान गुलाम भी मुश्रिक पुरुष से बहुत बेहतर है यद्यपि वह आजाद ही क्यों न हो और अपनी दौलत और रूप की वजह से तुम को पसन्द हो मालूम हुआ कि कम से कम दरजे का मुसलमान भी मुश्रिक से बहुत अफज़ल है यद्यपि वह बुलन्द से बुलन्द दर्जे का ही क्यों न हो।

2. अर्थात मुश्रिक पुरुष और मुश्रिक महिलायें जिनका जिक्र हुआ उनकी बातों उनके कार्यों उनकी महब्बत उनके साथ मिलना जुलना शिर्क की नफरत और उसकी बुराई को दिल से कम करता और शिर्क की तरफ रुचि का कारण होता है जिसका अंत दोज़ख है इसलिए ऐसे लोगों से विवाह करने से बचना पूरे तौर पर जरूरी है।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

सफों के बराबर करने का हुक्म

—अमतुल्लाह तस्नीम

फरिशतों की नक़ल:-

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और कहा तुम ऐसी सफें क्यों नहीं बाँधते हो जैसे फरिशते अपने रब के पास सफों को ठीक रखते हैं, हमने पूछा कि फरिशते अल्लाह के पास सफों को किस तरह ठीक रखते हैं फरमाया, पहले अगली सफों को भर लेते हैं और खूब मिल कर खड़े होते हैं। (मुस्लिम)

पहली सफ की फज़ीलत :-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर लोग अजान और पहली सफ की फजीलत को जान लें तो उसके हासिल करने में लोग फाल डालने पर मजबूर हो जायें। (बुख़ारी—मुस्लिम)

पुरूषों की पहली और महिलाओं की पिछली सफ :- हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पुरुषों की पहली सफ बेहतर है और पिछली बुरी है, और महिलाओं की पहली सफ बुरी है और पिछली बेहतर है (बदले और सवाब के ऐतबार से) (मुस्लिम)।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को देखा कि पीछे रहते हैं तो फरमाया आगे आओ और मेरी पैरवी करो और तुम्हारे बाद वाले तुम्हारी पैरवी करें कुछ लोग हमेशा पीछे रहते हैं अल्लाह तआला उनको पीछे ही कर देगा। (मुस्लिम)

सफ बराबर करने का एहतिमाम:-

हज़रत अबू मस्ऊद रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में हमारे कंधों पर हाथ फेर कर सफ को बराबर करते थे और फरमाते थे की बराबर बराबर रहो आगे पीछे न रहो अतः तुम्हारे दिल भिन्न हों जायेंगे और तुम में जो अकलमंद हों वह मेरे करीब हों फिर जो उनसे करीब हों फिर जो उनसे करीब हों (अकलमंदी में) (मुस्लिम)

❖❖❖

सफल हो गये ईमान वाले। जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं। और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं। और जो ज़कात अदा करते हैं। और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं। सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौण्डियों के पास जाएं कि इस पर वे निन्दनीय नहीं है। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सिमोल्लंघन करने वाले हैं। (कुर्आन मजीद)।

ईद मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्हमदु लिल्लाह रमज़ान के रोज़े पूरे हुए और ईद का मुबारक दिन आया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस से मालूम हुआ कि ईमान वालों को अल्लाह तआला ने साल में खुशी के दो दिन अता फरमाए हैं, ईदुल फित्र (रमज़ान खत्म होने पर ईद) और ईदुल अज़्हा (कुर्बानी वाली ईद) ईदुल फित्र की ईद की खुशी का हक़ हकीकत में उन्हीं खुश नसीबों का है जिन्होंने रमज़ान का हक़ अदा किया सब रोज़े रखे, नमाज़ों का हक अदा किया, हस्ब इस्तिताअत व तौफीक नवाफ़िल पढ़ने तिलावत करने, दुरुद शरीफ पढ़ने और खैरात करने में हिस्सा लिया, एहतिमाम से तरावीह की नमाज़ पढ़ी वगैरह, जो भाई किसी शरई उज्र से रोज़े न रख सकें जिसका उन्हें मलाल है, जो भाई गुरबत के सबब खैरात न कर सके लेकिन उनको इस का रंज रहा और दिल में कहते रहे कि काश हमारे पास माल होता तो हम भी अल्लाह की राह में खर्च करते इन सब के लिए भी ईद के मुबारक दिन में खुश होने और खुशी मनाने का वाक़ई हक़ है। लेकिन आज तो वह भी खुश हैं और खुशियां मना रहे हैं जो सारे रोज़े चट कर गये, मस्जिद में दाखिल होने का खयाल तक दिल में न लाए तो तरावीह क्या पढ़ते लेकिन आज गुस्ल किया है अच्छे कपड़े पहने हैं खुशबू लगाई है, सिवय्यों का लुत्फ लिया है और ईदगाह जाने को तैयार हैं।

काश की कोई दीनदार उनसे कहता कि मियां बड़े खुशनसीब हो अब अल्लाह के आगे झुकने में अपनी जिन्दगी का रुख मोड़ देने का फैसला कर लो उनके सामने क़ब्र की तवील जिन्दगी और वहां की हालत का नकशा खींचा जाता फिर पहले सूर के सख़्त जलजले (भूंचाल) का ज़िक्र आता, फिर दूसरे सूर पर हश्र के मैदान का नकशा सामने लाया जाता फिर हिसाब व किताब, फिर पुले सिरात से गुज़रना याद दिलाया जाता फिर जन्नत व दोज़ख़ का नक्शा सामने ला कर उनके सामने वह सवाल रखा जाता कि क्या आप की और हमारी जो आज़ाद जिन्दगी है क्या इस पर अल्लाह के करम की उम्मीद की जा सकती है? फिर उनको दावत दी जाती की आप खुश नसीब हैं कि आप को यह मुबारक दिन नसीब हुआ खुदारा सोचिए अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो क़ब्र, व हश्र, जन्नत और दोज़ख़ के बारे में खबर दी है वह हक़ है तो फिर क्यों न इसी दम अपने पिछले किये पर तौबा करें और अहद करे कि अब इनशाअल्लाह कोताही न होगी, पाबन्दी से नमाज़ अदा होगी, पाबन्दी से रोज़े रखूंगा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की पैरवी में जिन्दगी गुज़रेगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन बातों से मना फरमाया है उनके करीब न जाऊँगा, अगर यह कोशिश कर ली जाए तो मुझे उम्मीद है कि उन भाइयों की भी काया पलट हो जाएगी और उन की भी ईद की खुशी हक़ीक़ी खुशी बन जाएगी, कोशिश करना अपना काम है तौफीक़ रब्बुल आलमीन के हाथ है। इन बातों से यह न समझना चाहिए कि मैं अपने को बड़ा मुत्तक़ी बुजुर्ग समझता हूँ हरगिज़ नहीं, यह नमाज़ रोज़े की अदायगी हुई महज़ अल्लाह की तौफीक़ है फिर भी कबूलियत उसी के इख़्तियार में है, मैं जो कुछ हूं अपने मैं अपने को ज़्यादा जानता हूँ अल्लाह के करम का ही सहारा है में खुद कुछ नहीं यही बात उन दीनदारों को समझना चाहिए जिनको अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से अपने ग़फलत में पड़े हुए बन्दों को अपनी तरफ़ बुलाने का काम ले रहा है।

हाँ–हाँ ईद हमारी खुशी का दिन है इस दिन बहुत सवेरे उठ कर फज्र की नमाज़ पढ़ें और सुब्ह ही से आहिस्ता आवाज़ में अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, ला इलाह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द पढ़ें, गुस्ल करें, मिस्वाक करें अच्छे कपड़े पहनें (जो अल्लाह ने दिये हों) खुशबू लगाएं, कुछ मीठा खाएं और हां अगर आप साहिबे निसाब हों (माल वाले हों) तो आप अपनी तरफ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से फित्रा अदा कर चुके हों तो बड़ी अच्छी बात है वरना फित्रा निकाल कर मुस्तहिक़्क़ीन को पहुंचाएं और ऊपर लिखी तक्बीर हल्की आवाज़ से पढ़ते हुए ईदगाह जाए, वहां अपने भाइयों से मिलें बाहम दुआ सलाम और मुबारक बाद दें यह मौक़ा हो तो नमाज़ से पहले करें वरना बाद में सहीह, ईदगाह में जो कुछ बयान किया जाए ध्यान से सुने उस पर अमल का इरादा करें, ख़ुशूअ़ व खुजूअ़ के साथ ईद की नमाज़ अदा करें।

आप नमाज़ के लिए जाते वक्त तकबीर पढ़ते गये वापसी में मुमकिन हो तो रास्ता बदल दें मुमकिन न हो तो यह ज़रूरी भी नहीं है, मगर अच्छा यह है कि वापसी में भी अल्लाह की बड़ाई ज़बान से अदा करते हुए लौटें यानी तकबीर पढ़ते हुए आएं। बेशक आज खुशी का दिन है खुशियां मनाएं, खाएं खिलाएं, लेकिन गुनाहों से बचें, बच्चे खेल कूद के दिल चस्प मुज़ाहरे करें, हां नअत व हम्द पढ़ें, शाहनामा के अशआर से लुत्फ लें लेकिन म्यूजिक वाली रिकार्डिंग से बचें और बचाएं, किसी म्यूजिक के बगैर नअ़त व हम्द या तारीख़ी वाकिआत रिकार्ड किये हों तो उनको सुनने में हर्ज नहीं।

ईद की नमाज़ के बारे में–

यह नमाज़ साल भर के बाद आती है फिर दूसरी नमाज़ों से मुख़्तलिफ होती है इसलिए इसका जिक्र मुनासिब मालूम होता है। यह नमाज़ जमाअत ही से होती है तन्हा नहीं पढ़ी जाती।

ईदुल फित्र और ईदुल अज्हा की नमाज़ के लिए न अजान है न इकामत, इसलिए चाहिए कि पहले से एलान हो कि फुलाँ वक्त नमाज़ अदा की जाएगी ताकि लोग वक्त मुकर्ररा पर ईदगाह पहुँच जाएं। इस नमाज़ में 6 तकबीरें जाइद (अधिक) कही जाती हैं। तीन पहली रकअ़त में तीन दूसरी रकअ़त में, बाज़ इलाकों में अहले हदीस हजरात हैं वह बारह तकबीरें जाइद कहते हैं लिहाजा अगर उनकी ईदगाह में नमाज़ अदा करने का इत्तिफाक़ हो तो बारह तकबीरें कहें। झगड़ें नहीं दोनों तरीके सही हैं अहनाफ़ के नजदीक 6 जायद तकबीरें कहना बेहतर है अहले हदीस हजरात के नजदीक बारह तकबीरें जाइद कहना बेहतर है नमाज दोनों की सही है। सऊदिया के हंबली लोग भी बारह तकबीरें कहते हैं।

नीयतः— नीयत दिल के इरादे का नाम है पस आप सोचें की मैं दो रकअत ईदुल फित्र वाजिब पढ़ने की नीयत करता हूँ इस के 6 तकबीरें भी कहूँगा और सामने के इमाम को जिहन में लें कि उनके पीछे पढ़ रहा हूँ बस नीयत हो गई अल्लाहु अक्बर कह कर हाथ कानों तक उठाकर बाँध लें। नीयत ज़बान से कहने में अहनाफ के नज़दीक अच्छी ही बात है मगर दिल का इरादा ज़रूरी है ज़बान से यूं कहें 'नीयत करता हूँ दो रकअ़त नमाज़ ईदुल फित्र वाजिब, 6 जाइद तकबीरों के साथ पीछे इस इमाम के, फिर कानों तक हाथ उठाएं अल्लाहु अकबर साफ साफ कहें और हाथ बाँध लें। नीयत में मुंह मेरा तरफ काबे शरीफ के कहना ज़रूरी नहीं कहलें तो कोई हरज़ भी नहीं।

अब आप सना पढ़ेंगे, इमाम सना के बाद अल्लाहु अकबर कहेगा आप भी कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कह कर हाथ छोड़ दें फिर दूसरी तकबीर इमाम के साथ उसी तरह कह कर हाथ छोड़ दें, फिर तीसरी तकबीर उसी तरह इमाम के साथ कह कर हाथ बाँध लें, अब इमाम किराअत करेगा आप सुनें, फिर इमाम के साथ रुकूअ़, सजदे करके दूसरी रकअ़त के लिए ख़ड़े होंगे अब इमाम किराअत करेगा आप सुनें फिर इमाम रुकूअ़ से पहले तीन तकबीरें पहले की तरह कहेगा आप भी कहें इन तीनों तकबीरों के बाद हाथ न बाँधें फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए इमाम के साथ रुकूअ़ में जाऐं और इमाम के साथ नमाज़ पूरी करें।

नमाज़ के बाद इमाम जुमे की तरह दो खुत्बे पढ़ेगा आप सुनें। नमाज़ तमाम हुई। कोई इमाम नमाज़ के बाद और कोई खुत्बों के बाद दुआ मांगता है जहाँ जो रायज हो उस पर अमल करें झगड़े नही, मेल महब्बत बाक़ी रखें। अहले हदीस हज़रात इमाम के पीछे सूर—ए—फातिहा पढ़ते हैं, अहनाफ एक हदीस के मुताबिक़ इमाम की सूर—ए—फातिहा को अपनी तरफ से काफी समझते हैं इसमें भी एक दूसरे को ग़लत कहना और झगडना बुरी बात है आपस का मेल ज़रूरी है।

शेष पृष्ठ.....10 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

जाहिरी सूरत में नाकामी हकीकत में कामयाबी-

मुआहिदे (समझौते) के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीने वापस तशरीफ ले आए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुरैश के एक फर्द अबू बसीर उतबा बिन उसैद मुसलमान हो कर पहुंचे उनकी तालाश में कुरैश ने दो शख़्स भेजे और वह मुआहिदा आपको याद दिलाया, चूनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआहिदे की बिना पर अबू बसीर को इन दोनों के हवाले किया, यह दोनों उन्हें साथ लेकर वापस लौटे लेकिन रास्ते में अबू बसीर का इन दोनों में एक से टकराव हो गया और अबू बसीर ने उसको खत्म कर दिया, दूसरा आदमी भाग कर मदीने आया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की, अबू बसीर भी आये और कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे वापस कर दिया था आपने मुआहिदे पर अमल कर दिया था अब तो मैं खुद अपनी ज़ाती बुनियाद पर आया हूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ज़िम्मेदारी नहीं, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात कुबूल नहीं की कि इससे ग़लत राय क़ायम की जायेगी लिहाज़ा आपने अबू बसीर को ठहरने की इजाज़त नहीं दी, तो अब अबू बसीर बजाए मक्का के समुद्र के साहिल पर आ गए उसी तरह एक दूसरे फ़र्द अबू जंदल बिन सुहैल भी मुसलमान हो कर कुरैश की ज़द से निकले और बजाए मदीना जाने के अबू बसीर से आ मिले और अब यह होने लगा कि कुरैश का जो भी मुसलमान मक्का से जान व ईमान बचा के निकलता तो वह सीधा अबू बसीर से जा मिलता। रफ़ता रफ़ता उनकी पूरी जमाअत तैयार हो गई और साहिली इलाक़े पर जो मक्का और शाम के रास्ते में था जगह बना ली, फिर यह लोग यह करने लगे कि (मक्का और शाम के रास्ते पर अपना मुस्तक़र (ठिकाना) बना लेने की वजह से) वहां से कुरैश का जो भी क़ाफिला शाम जाने वाला उन्हें मिलता यह उसका रास्ता रोक कर उसके माल व असबाब पर कब्ज़ा कर लेते और क़ाफिले वाले मुज़ाहिमत (रुकावट) डालते तो उनको क़त्ल कर डालते। आख़िरकार कुरैश ने इस सूरतेहाल से आजिज़ हो कर अल्लाह का वास्ता और रिश्तेदारी और क़राबत की दुहाई देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों को अपने पास ज़रूर बुलवा भेजें और मुआहिदे में यह तरमीम की जाती है कि मुसलमान हो कर जो भी जाये उसको आप कुबूल कर सकते हैं, मुआहिदे की वह शर्त ख़त्म समझें अब जो भी मुसलमान हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

के पास पहुंचेगा, वह सुरक्षित व महफूज़ रहेगा[1]।

सुलह (समझौता) के फाइदे और आश्चर्यजनक परिणाम व प्रभाव-

दूसरे पेश आने वाले वाक़िआत और घटनाओं ने यह साबित कर दिया कि सुलह हुदैबिया से जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अस्तर से बहुत कुछ उतर कर मुआहिदा फ़रमाया था और कुरैश का मुतालबा मान लिया था और उन्होंने भी उसको अपनी बड़ी जीत और नफ़े का सौदा समझा था और मुसलमानों ने इसको सिर्फ ईमानी कूव्वत और नबी की पूर्ण आज्ञापालन की भावना से इसको बर्दाश्त कर लिया था। हक़ीक़त में इस्लाम की तरक़्क़ी व कामयाबी का एक नया दरवाज़ा खुल गया और कुरैश से इस मुआहिदे के हो जाने के नतीजे में मुसलामनों का आज़ादी के साथ आने जाने, मिलने जुलने का मौका मिलने लगा और उनको इस तरह दावती काम की भी आसानी हो गई, इसके असर से इस्लाम का अरब द्वीप में इस क़दर तेज़ी के साथ विकास हुआ कि इससे पहले कभी न हुआ था, क्योंकि अब मुसलमानों को बग़ैर किसी खतरे के दावते हक़ का काम करने की आज़ादी हासिल हो गई थी। दूसरी तरफ कुरैश दो साल ही गुज़रे थे कि खुद ही मुआहिदे की पाबन्दी से आजिज़ हो गए और खुले तरीक़े से मुआहिदे की खिलाफ वर्जी के मुजरिम बने, उन्होंने मुसलमानों के हलीफ क़बीले खुज़ाआ से जंग कर डाली जिसकी मुआहिदे में गुंजाईश नहीं थी खुज़ाअ ने मुसलमानों के ना जंग मुआहिदे के हवाले से मदद तलब कर ली और मुआहिदे के टूट जाने की इत्तिला दी, इसकी बिना पर मुसलमानों ने फौज ले कर मक्के की तरफ कूच किया, उनकी तादाद इतनी ज़बरदस्त थी कि मक्के वालों की हिम्मत जवाब दे गई, और वह ऐसे भयभीत हुए कि मक्का बिला जंग किये मुसलमानों को मिल गया इस तरह पूरे अरब द्वीप के केन्द्र पर मुसलमानों का प्रभुत्व स्थापित हो गया, इससे पहले भी मुआहिदे की दो साला अमन की मुद्दत में विभिन्न क्षेत्रों के शासकों को भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावते इस्लाम के पत्र लिखे थे और उनके ज़रिए कैसर व किसरा, मक़ोक़स, नजाशी, अरब के सरदारों को इस्लामी दावत दी थी, जिसका इस्लाम की कूव्वत व अज़मत (शक्ति व महानता) के क़ायम होने में गहरा असर पड़ा, अल्लाह तआला ने बिल्कुल सही इरशाद फरमाया :

अनुवाद : "मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को भली लगे और वह तुम्हारे लिए मुज़िर (हानिकारक) हो और (इन बातों को) खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते" (सूर बक़रा: 216)

इस तरह इस्लाम के परिचय और उसके लोकप्रिय होने में बड़ा इज़ाफा हुआ

1. सही बुख़ारी, किताबुशशुरुत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद।

और इस्लाम में लोग दल के दल दाखिल होने लगे। इन्हीं असबाब की बिना पर इस समझौते को अल्लाह तआला की तरफ से फतह क़रार दिया गया। इसी मुआहिदे के अनुसार मुआहिदे के अगले साल ही मुसलमानों को बैतुल्लाह जाने और उमरा करने का मौक़ा मिला और कुफ़्फ़ार ने कोई रुकावट नहीं डाली, बगैर किसी टकराव के मुसलमानों के उमरे की ख़्वाहिश पूरी हुई, दूसरी तरफ़ कुफ़्फ़ार के सामने मुसलमानों की अमन पसन्दी का रुख स्पष्ट हुआ कि अमन (शान्ति) की बहाली के लिए वह सिर्फ मामूली अमन पसन्दी ही नहीं बल्कि उसके लिए उन्होंने अपने जज़्बात और हमीयत (भावनाओं और स्वाभिमान के तकाज़ों तक को दबाया।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अमर बिन आस का क़बूले इस्लाम-

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अमर बिन आस रज़ि0 अपनी शुरु ज़िन्दगी ही से कुरैश के नामवर लोगों में थे। कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन उनकी मदद व शिरकत से बड़ी कूव्वत महसूस करते थे, सुलह हुदैबिया के वक़्त भी यह कुरैश के ही सहयोगी थे। हज़रत ख़ालिद अपनी फ़ौजी सलाहियत और हज़रत अमर बिन आस राजनीतिक सूझ बूझ में वरिष्ठ थे। सुलह हुदैबिया के बाद यह दोनों इस्लाम की सत्यता और कलयाण से प्रभावित होकर इस्लाम ले आए। उनके इस्लाम ले आने से इस्लाम की जड़ों को मज़बूत करने में इन दोनों का बड़ा हिस्सा रहा और उन्होंने बड़े कारनामें अंजाम दिये। हज़रत ख़ालिद की तलवार ने रोम व शाम में ज़लज़ला पैदा कद दिया यहां तक कि जंगों में उनकी शिरकत फतह (विजय) की ज़मानत समझी जाने लगी। जंगों में उन्होंने जो कारनामे अंजाम दिये वह (आबेज़र) सोने के पानी से लिखे जाने लायक़ है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "सैफुल्लाह" यानी अल्लाह की तलवार का उन्हें ख़िताब दिया।

हज़रत अमर बिन आस (जिनके हिस्से में मिस्र की फतह मुकद्दर थी) अक़्ल व ज़हानत (प्रखर बुद्धि या सूझ–बूझ) में अरब के चार मुमताज़ (श्रेष्ठ) लोगों में से एक कहे जाते थे, उन्हों ने हब्शा में नजाशी शाहे हब्शा से एक मुकालमे (वार्तालाप) के बाद हज़रत जाफर बिन अबी तालिब के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया इन दोनों के इस्लाम लाने से इस्लाम और मुसलमानों को बड़ी ताक़त मिली और उनकी सलाहियतें (क्षमताएं) दीन के विकास और तरक्की में खूब काम आई।

❖❖❖

ईद मुबारक .....

ज़ाइद तकबीरात कहते वक़्त हाथ छोड़ने या बाँधने में भूल हो जाए तो उससे नमाज़ ख़राब नही होती।

अल्लाह तआला हमारे रोज़े और हमारी ईद की नमाज़ को कबूल फरमाए और सारे भाईयों को सिहत व आफियत और फ़रहत अता फ़रमाए और अपनी पसन्दीदा राह पर चलाए। ❑❑

—देंवनागरी लिपि में उर्दू

मारक-ए-ईमान व माद्दीयत (ईमान और भौतिकता की लड़ाई)

—मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

—लिपि: मो0 मुहम्मदुल हसनी रह0

दज्जाल की शख़सीयत की कलीद–

दज्जाल की शख़सीयत की वह कलीद (कुंजी) जिससे उसके सारे बन्द कुफ़्ल खुल जाते हैं और उसकी गहराइयाँ भी सतहे आब पर आ जाती हैं और जो उसको शर व फसाद और कुफ्र व इलहाद के दूसरे तमाम अलम बरदारों में नुमायां करती है वह यही दज्जाल का मखसूस लक़ब और वस्फ है जो उसकी पहचान और अलामत बन गया है। दज्जाल और दज्जालीयत ऐसा महवर है जिसके गिर्द उसकी पूरी शखसीयत और उसके तमाम प्रोग्राम, मुज़ाहरे सरगर्मियां और आमाल गर्दिश कर रहे हैं और उसके हर फेल पर उसका साया है।

अहदे हाजिर (आधुनिक काल) की माददी तहज़ीब का भी सबसे बड़ा हरबा यही मुलम्मा साज़ी और फरेबकारी है और उसका सबसे नुमायां पहलू यह है कि उसने किसी चीज़ को उसके असर से आज़ाद नहीं छोड़ा, हकाइक़ कुछ और होते हैं, नाम उनके बर अक्स रखे जाते हैं, इस्तिलाहात और पुरशिकोह अलफाज़ का बकसरत रवाज़ है, ज़ाहिर व बातिन का एक दूसरे से कोई तअल्लुक़ नहीं, आगाज़ व अंजाम, तम्हीद व इख़तिताम, इल्मी नज़रियात और अमली तजरिबों में यक्सानीयत की कोई ज़रूरत नहीं समझी जाती यही हाल उन फलसफों और नारों का है जिन्होंने मज़ाहिब की जगह ले ली है और इन्सानों के दिल व दिमाग़ को मस्हूर कर रखा है उसके जुअमा के अक़्वाल व बयानात के गिर्द तक्दीस का एक हाला काइम कर दिया गया है और उनकी अकीदत व महब्बत दिल में तहनशीन हो चुकी है, उनके अफ्कार व ख़्यालात की बरतरी व बालातरी और इस्मत व तक़द्दुस में शुब्हा करना रजअत पसन्दी की अलामत, अम्र बदीही और महसूस व मशहूद चीज का इन्कार समझा जाता है। और बड़े बड़े ज़हीन व ज़की आला दर्जे के अहले इल्म और गैर मामूली सलाहियत के अहले फिक्र व नज़र भी इस मुआमले में मुगालता और फरेबे नजर का शिकार हैं और वह भी उन फलसफों और तहरीरों के गुन गाने लगे हैं। और उनकी हां में हां मिलाने लगे हैं और उनके अलमबरदारों और लीडरों के जज़्ब–ए–इख़्लास, और सदाकत का इम्तिहान लिए बगैर बड़े यकीन व गर्म जोशी के साथ उसके दाई बन चुके हैं और अख़्लाकी जुर्अत के साथ उनकी काम्याबी और नाकामी का हिसाब लगाये बगैर और उन नजरयात के नतीजे में इन्सानियत के नफा व नुक्सान का गैर जानिबदाराना और सहीह जाइज़ा लिये बगैर उसके हम नवा और हम आवाज़ हैं और यह देखने

के रवादार नहीं कि उन तहरीकों के नतीजे में हक़ीकी काम्याबी और फित्री हुकूक इन्सानियत को हासिल होते भी हैं या नहीं? यह सब उसी दज्ल व फरेब का असर और सिहर है जिस ने "दज्जाले अकबर" पेशरौ छोटे दज्जालों, फरेब कारों और मुलम्मा साज़ों से आगे होगा ख्वाह वह तारीख के किसी दौर में गुजरे हों।

यह दज्जाली और पुर फरेब रूह इस तहजीब में इस वजह से दाखिल हुई और सरायत कर गई कि उसने भी नुबुव्वत, आखिरत, ग़ेब, खालिके कायनात और उसकी कुदरते कामिला पर ईमान और उसकी शरीअत व तालिमात का बिल्कुल मुखालिफ रुख इख़्तियार किया, हवासे जाहिरी पर ज़्यादा भरोसा और उस पर सिर्फ उन चीज़ों से दिलचस्पी रखी जो इन्सान को जिस्मानी लज्जत और फौरी मनफअत और जाहिरी उरूज व ग़ल्बे से हमकनार कर सकें और यही नुक्ता है जिस पर सूर–ए–कहफ़ में सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है और उसमें जितने इबरत अंगेज़ वाक़िआत व हकाइक गुज़रे हैं वह इसी मरकज़ी नुक्ते से वाबस्ता हैं और एक लड़ी में पैवस्त हैं।

तहजीब व तमद्दुन की तशकील और इन्सानियत की रहनुमाई में ईसाइयत व यहूदियत का मिलता जुलता किरदार–

हमें अफसोस के साथ इस हकीक़त का एलान करना पड़ेगा कि ईसाइयत जिसने कुरूने मुज़लिमा (अंधकाल) के बाद योरोप की कियादत की और जज़्ब–ए–इन्तिक़ाम में सरग़र, बाग़ी यहूदियत का किरदार (अ़काइद में बुनियादी इख़्तिलाफ़ के बावजूद) बहुत मिलता जुलता रहा है और यह दोनों मज़हब तहज़ीबे इन्सानी का रुख़ ऐसी मुकम्मल और इन्तिहा पसन्दाना माद्दीयत की तरफ फेरने में जो अंबिया की तालीमात और रुहानियत से बिल्कुल आज़ाद हो और इन्सानियत के मुस्तक़बिल पर असर अन्दाज़ होने में बराबर के शरीकेकार और ज़िम्मेदार रहे, ईसाई अक़्वाम ने जो कलीसा और योरोप की बालादस्ती से आज़ाद हो चुकी थी और जिनका रिश्ता अस्ली ईसाइयत से (जो सुलह पसन्द और तौहीदे खालिस की दाई थी) अगर मुनक़ते नहीं तो कमज़ोर ज़रूर हो गया था, यह तेज़ रौ और इन्तिहा पसन्दाना माददी रूख इख़तियार किया, और बिल आखिर जदीद इल्मी इक्तिशाफत और तबाह कुन ईजादात के नतीजे में पूरी दुनिया और इन्सानियत एक अ़ज़ीम खतरे से दोचार है, और इल्म व ज़ज्बात, अक़्ल व ज़मीर और तबीअत व अखलाक़ के दर्मियान तवाजुन और ज़रूरी तनासुब यकसर मफकूद हो चुका है।

अहदे आखिर में यहूदियों ने (मुख़्तलिफ अस्बाब की बिना पर जिनमें बाज़ उनके नस्ली ख़साइस से तअल्लुक रखते हैं बाज़ तालीम व तरबियत से, बाज़ सियासी मक़ासिद और क़ौमी मन्सूबों से) इल्म व फन और ईजादात व इख़्तिराआत के मौदान में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, उन्होंने एक तरह से तहजीबे जदीद पर पूरा कन्ट्रोल कर लिया और अदब व तालीम,

सियासत व फलसफा तिजारत व सहाफत और कौमी रहनुमाई के सारे वसाइल उनके हाथ में आगये उसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने मगरिबी तहजीब (जो मगरिबी माहौल में पैदा हुई) के एक अहम तरीन उन्सुर की हैसियत हासिल कर ली, जदीद तग़य्युरात का जाइज़ा लेने से हमें अन्दाजा होगा कि बेनउल अक्वामी यहूदियत का असर व रुसूख़ मगरिबी मुआशरे में किस कदर बढ़ चुका है। अब यह तहजीब अपने तमाम सरमा–ए–इल्म व फन के साथ अपने मन्फी अंजाम की तरफ बढ़ रही है और तख़रीब व फसाद और तल्बीस व दज्ल के आखिरी नुक्ते पर है और यह सब उन यहूदियों के हाथों हो रहा है जिन को अहले मग़रिब ने सर आंखों पर बिठाया और उनके दूर रख खुफिया मकासिद इन्तिकामी तबीअ़त और तखरीबी मिज़ाज से ग़ाफिल व बे परवाह हो कर उनकी जड़ों को अपने मुल्कों में खूब फैलने और गहरा होने का मौका दिया और उनके लिए ऐसी सहूलतें और मवाके फराहम किये जो तवील सदियों से उनके ख़्वाब व ख़याल में भी न आ सके होंगे, यह इन्सानियत का सबसे बड़ा इब्तिला है और ना सिर्फ अरबों के लिए (जो उनको भुगत रहे हैं, और न सिर्फ उस महदूद रक्बा के लिए जहां मौत व जीसत की यह कशमकश बरपा है) बल्कि सारी दुनिया के लिए सब से बड़ा खतरा है।

गालिबन इन्हीं वजुह की बिना पर इस सूरे का ईसाइयत व यहूदियत से गहरा तअ़ल्लुक है, बल्कि सूरे का आग़ाज़ ही अकीद–ए–ईसाइयत के ज़िक्र से हो रहा है। अनुवाद : सारी सताइशें अल्लाह के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी (यानी कुर्आन उतारा) और उसमें किसी तरह की भी कजी न रही बिल्कुल सीध बात रखी है। (हर तरह के पेच व खम से पाक) और इसलिए उतारी कि लोगों को खबरदार कर दें, अल्लाह की जानिब से एक सख़्त हौलनाकी (उन पर) आ सकती है, और मोमिनों को जो अच्छे अच्छे काम करते हैं खुश खबरी दे दें कि यक़ीनन उनके लिए बड़ी ही ख़ूबी का अज्र है हमेशा उसमें खुशहाल रहेंगे। नीज़ उन लोगों को मुतनबेह कर दे जिन्होंने (ऐसी सख़्त बात मुंह से निकाली कि "अल्लाह भी औलाद रखता है इस बारे में उन्हें कोई इल्म नहीं न उनके बाप दादों के पास कोई इल्म था कैसी सख़्त बात है जो उनके मुंह से निकलती है यह कुछ नहीं कहते मगर झूठ बकते हैं"। (सूर–ए–कहफ़ 1–5)

उस तहजीब की जो ईसाइयत की गोद में पली और बढ़ी और उसकी सर परस्ती में परवान चढ़ी। दूसरी पहचान या खुसूसियत इस महदूद व फानी जिन्दगी से हद से बढ़ा हुआ तअल्लुक उसको ज़्यादा से ज़्यादा आराम देह और तवील बनाने का शौक उसकी अज़मत में गुलू व मुबालगा और उसके सिवा तमाम अख़लाकी कद्रो, अ़जमतों और नेमतों की नफी, और माद्दी अस्बाब व वसाइल और जख़ाइर पर कब्ज़ा व इक्तिदार पर इन्हिसार और उसमें मुकम्मल इत्तिफाक और इस्तिग़रक है यह वह नुक्ता है जहां यहूदीयत अपनी सारी

ईसाइयत दुशमनी और रक़ाबत के बावजूद उसके साथ आ कर शरीक हो गई है।

तौरेत भी उख़रवी ज़िन्दगी पर यक़ीन और उसके लिए तैयारी, आलमे आखिरत की अबदी सआदत के हुसूल के लिए अपनी सलाहियतों और कूवतों के इस्तेमाल और जन्नत की नेअ़मतों और खुदा के इन्आमात का ज़ौक व शौक पैदा करने वाली चीज़ों के बयान इस दुनिया की बे हक़ीकती और उम्र की बे सबाती की तशरीह, इक्तिदार परस्ती और तौसीअ़ पसन्दी के जज़्बे की मज़म्मत, जमीन में तख़ारीब फसाद की मुमानीयत, जुहद व क़नाअ़त और दुनिया व मताए दुनिया से कम से कम वाबस्तगी की दावत से इस तरह खाली है कि हैरत होती है। उसका तर्ज़ उन आस्मानी सहीफ़ों के तर्ज़ से बिल्कुल जुदा नज़र आता है जो खुदा की तरफ से नाज़िल हुई हैं और जिनकी अस्ल रूह मुहब्बते दुनिया की मज़म्मत और आख़िरत की दावत है।

इस लिहाज़ से अगर यहूदीयत की तारीख़ सिर्फ माद्दी कूवत, रक़ाबत व मुसाबकत, दौलत की हवस, नस्ली गुरूर इक्तिदार परस्ती और क़ौमी तकब्बुर की तारीख़ में डट गई है तो तअ़ज्जुब न होना चाहिए यह जेहनीयत यहूद की मज़हबी किताबों, उनके अदब व लिट्रेचर, उनकी ईजादात व इख़्तिराआत उनके इख़्तिलाफात व तहरीक़ात और अफकार व ख़्यालात हर चीज़ से अ़यां हैं, और नर्म दिली, तवाज़ो, ज़ब्ते नफ़्स, खुद शिकनी, दुनियावी जिन्दगी से बे रग़बती, अल्लाह तआला से मुलाकात का शौक, आखिरत की तलब और इन्सानियत पर रहम व शफकत का कोई शाइबा उनके कौमी निज़ाम में नहीं पाया जाता है।

इसी वजह से अल्लाह तबारक व तआला ने इस सूरे में शिर्क और फरज़न्दी के अक़ीदे की जो ईसाइयत की तरफ मन्सूब है सख़्त मज़म्मत फरमाई है और दुनियावी जिन्दगी की परसतिश और उसको हमेशा का घर समझने, और हर चीज़ से कट कर उसमें मस्त व बेखुद रहने पर सख़्त तम्बीह की है और उसकी बुनियादी कमज़ोरी और बेसबाती की तरफ इशारा करते हुए फरमाया है :

"रूए ज़मीन मे जो कुछ भी है, उसे हमने ज़मीन की खुशनुमाई का मोजिब बनाया है और इसलिए बनाया है कि लोगों को आजमाईश में डालें कि कौन ऐसा है जिसके काम सबसे ज़्यादा अच्छे होते हैं, और फिर हम ही हैं कि जो कुछ ज़मीन पर है उसे (नाबूद करके) चटयल मैदान बना देंगे (सूरः कहफ 7–8)

दुनिया के परस्तारों, मुनकिरीने आख़िरत और अहले ग़फलत पर नकीर करते हुए इरशाद है "ऐ पैगम्बर तू कह दे हम तुम्हें ख़बर दे दें कौन लोग अपने कामों में सबसे ज़्यादा ना मुराद हुए? वह जिन की सारी कोशिशें दुनियावी ज़िन्दगी में खो गईं, और वह इस धोखे में पड़े हैं कि बड़ा अच्छा कारखाना बना रहे हैं" (सूर–ए–कहफः 103,104)

इसी तरह अक़ीद–ए–आखिरत, ईमान बिल ग़ैब और ख़ालिक़े क़ायनात और उसकी

कुदरते कामिला पर ईमान, सूरे के अव्वल व आखिर बल्कि उसके तमाम हिस्सों पर मुहीत है। यह वह अकीद –ए–नफ्सीयात, अकलीयत और मिजाज है, जो मादीयत के मिज़ाज व नफ्सीयात से यक्सर मुखालिफ है उसके बरअक्स माददीयात (जो सिर्फ हिस, मुशाहदा और तजरबा पर एतिमाद करती है और दुनियावी मनफअत, जिस्मानी लज़्ज़त और कौमी व नस्ली कियादत व बरतरी का काइल है) उससे इबा करती है और उससे मुतनफ्फिर है बल्कि अपनी पूरी कूव्वत व सलाहियत के साथ, उससे बरसरे पैकार है यह सूरे जिस माददे और जौहर पर मुशतमिल है, उसके अन्दर उस मादीयत का तिरयाक पहले से मौजूद है, जो तकदीरे इलाही से सबसे ज़्यादा ईसाइयों के हिस्से में आई और पूरी तारीख में वह उस के सबसे बड़े सरपरस्त दाई और निगरां व ज़िम्मेदार साबित हुए उसके बाद उसकी तौलियत व कियादत यहूद के हाथ में रही जो हज़रत मसीह के शुरु से दुशमन और हर दौर में मसीहीयत के रक़ीब थे और अब उन्हीं यहूदियों के हाथों यह तहजीब अपनी आखिरी बुलन्दियों तक पहुंचेगी और उन्हीं में "दज्जाले अकबर" ज़ाहिर होगा, जो कुफ्र व इलहाद और दज्ल व तल्बीस का सबसे बड़ा अलम –बरदार और सारे दज्जालों का सरदार होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया है कि "इस सूरे और खास तौर पर उसके इब्तिदाई हिस्से की तिलावत उसके फित्ने से महफूज़ रखती है" इस तरह सूरे का आगाज़ व इख़्तिताम के दर्मियान एक ऐसी लतीफ मुनासबत काइम हो गई है जिसको हर शख़्स महसूस कर सकता है, मजमूई तौर पर सूरे का तअल्लुक़ फित्न–ए–दज्जाल से बहुत महरा है और उसका ज़िक्र अपने मौके पर आएगा।

❖❖❖

मानवता जीवित है

आपदा की घड़ी में पेश की सौहार्द की मिसाल

देहरादून। कुदरत की मार के बीच कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो मानवता की मिसाल पेश कर रहे हैं। जौलीग्रांट एयरपोर्ट पर आसपास के गावों से कई मुस्लिम लोग भी यात्रियों और उनके परिजनों के लिए खाने-पीने का सामान लेकर पहुँचें डोईवाला क्षेत्र के कुड़कावाला निवासी नौशाद अली ने बताया कि उन्हें पता चला था कि यहां लोगों को खाने और पानी की जरूरत है। उन्होंने गांव के कुछ साथियों के साथ मिलकर पैसा जमा किया और सुबह पानी की बोतलें, चिप्स व खाने का अन्य सामान लेकर जौलीग्रांट पहुँच गये। उनके सहयोगी फरमान अली का कहना था कि यात्रा पर जाने वालों में भले मुस्लिम शामिल न हों, पर जो गये वे भी अपने भाई ही हैं। गांव के ये लोग किसी संगठन और संस्था से नहीं जुड़े हैं।

"ज़िक्र" कुर्आन व हदीस की रौशनी में

—मौलाना अब्दुल्लाह हसनी रह0

कुर्आन में ज़िक्र का बयान—

"सो तुम याद करो, मैं तुम्हें याद करुँगा और मेरा एहसान मानते रहना और नाशुक्री मत करना"।

(सूर—ए—बकर: 152)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह को अधिकाधिक याद करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह पढ़ो"।

(अल अहज़ाब: 41—42)

"ऐ ईमान वालो! तुम्हारा माल और तुम्हारी संतान तुम को खुदा की याद से गाफ़िल (असावधान) न कर दे, और जो ऐसा करेगा तो वे लोग घाटा उठाने वाले हैं"।

(अल्मुनाफिकून 9)

हदीस में ज़िक्र का बयान—

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बंदे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान रखता है, जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं उसको अपने दिल में याद करता हूँ, अगर वह मुझे महफिल में याद करता है तो मैं उसको उससे बेहतर महफिल में याद करता हूँ"। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मुफर्रिदून आगे बढ़ गये, सहाबा ने पूछा मुफर्रिदून कौन लोग हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अधिकाधिक याद करने वाले पुरुष और महिलाएं।

(मुस्लिम शरीफ)

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना है कि सबसे ज़्यादा सवाब वाला ज़िक्र "लाइलाह इल्लल्लाह है"। (तिर्मिज़ी)

ज़िक्र का महत्व व मक़ाम—

"ज़िक्र किसको कहते हैं? ज़िक्र का मक़ाम क्या है? कुर्आन व हदीस से स्पष्ट है कि ज़िक्र से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं है, कुर्आन में आया है "और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है"।

(अल अंकबूत)

कुर्आन व हदीस से मालूम होता है कि बंदों के लिए आखिरत में सबसे ज़्यादा प्रिय चीज़ और आगे बढ़ने वाली चीज़ अल्लाह की याद है, अल्लाह के बंदे जो जन्नत के लायक होंगे जब जन्नत में पहुंच जाएंगे और जन्नत की नेमतें उन्हें मिल जाएंगी तो अल्लाह कहेगा और कुछ मांगो, वे हैरत से पूंछेगें, क्या इसके बाद भी कोई चीज़ हो सकती है? सब कुछ तो मिल गया, आपका दीदार भी हो गया, सबसे आनन्द और मजे वाली चीज़ अल्लाह का दीदार है फिर अल्लाह फरमाएगा तुम पर मैं अपनी रज़ा अनिवार्य कर रहा हूँ और मैं तुम से कभी नाराज़ नहीं हूँगा। (बुखारी)

अल्लाह की रजा सबसे बड़ी दौलत है, इसीलिए कुर्आन में कहा गया "और अल्लाह की प्रसन्नता बहुत बड़ी चीज़ है" (सूरः तौबा 72) तो स्पष्ट है कि जब अल्लाह की प्रसन्नता सबसे बड़ी चीज़ है यह बड़ी चीज़ मिलेगी, सबसे बड़ी चीज़ पर और वह अल्लाह का ज़िक्र है, अल्लह की रज़ा भी बड़ी चीज़ है और अल्लाह का ज़िक्र भी बड़ी चीज़ है, और बड़ी चीज़ बड़ी ही चीज़ से मिलती है।

ज़िक्र की हक़ीकत—

ज़िक्र का बहुवचन है अज़कार का एक अर्थ है याद करना, इसके विभिन्न रूप हैं— 1. लिसानी यानी ज़बान से अल्लाह को याद करना, 2. कल्बी यानी दिल से अल्लाह को याद करना, 3. तीसरा चरण चर्चा करने का है कि खुद भी ज़िक्र करें, और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

ज़िक्र की परोक्ष व प्राकृतिक व्यवस्था—

ज़िक्र जब इतनी बड़ी चीज़ है तो अल्लाह ने उसके लिए व्यवस्था भी की है कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके दाहिने कान में अज़ान दी जाती है और बायें कान में इक़ामत कही जाती है (इब्ने अब्बास बैहकी) जो ज़िक्र भी है और इल्म भी मानो इल्म व ज़िक्र कान में डाल दिया गया, दोनों का रस दिल व दिमाग़ में घोल दिया गया, ताकि दिल ठीक रहे जिसका सम्बंध ज़िक्र से है और दिमाग़ भी ठीक रहे जिस का सम्बंध इल्म से है, और दोनों उसी समय सही दिशा पर लग जाएंगे, और चलने लगेंगे, कुर्आन में जगह—जगह ज़िक्र का आदेश दिया गया है। "सो तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करुँगा (अल बक़रह 152) इन्सान की प्रकृति में है कि कोई एहसान करे तो उसका आभारी हुआ जाए वरना वह एहसान भुलाने वाला कहलाता है, अल्लाह तआला बचपन ही से इन्सान को अंगिनत नेमतों से माला माल करता रहता है, अगर वह अल्लाह को याद न करे तो कितनी बेवफाई की बात है कितनी बेशर्मी, बेगैरती और एहसान फरामोशी की बात है तो ज़िक्र इन्सान के मिज़ाज़ में डाल दिया गया है, अगर किसी के भीतर यह बात न हो तो वह एहसान फरामोश है।

ज़िक्र का तरीक़ा—

फिर अल्लाह ने याद करने का तरीक़ा भी बता दिया कि अगर कोई उसको याद करना चाहे तो इस प्रकार याद करे, आमतौर से पत्र पर पता लिखा जाता है तो उसी भाषा में लिखा जाता है, जो भाषा चल रही हो अगर उर्दू में पता लिखे तो गुम हो जाएगा, हिन्दी में लिखे तो जल्दी पहुंचेगा, अगर अंग्रेज़ी में लिखे तो सारी दुनिया में पहुंचता है, इसी प्रकार ज़िक्र का मामला है अरबी में तो इसका लाभ असाधारण होगा, यूं तो अल्लाह तआला ही भाषाओं को पैदा करने वाला है, जो जिस ज़बान में चाहे अल्लाह को याद करे, और जिस प्रकार चाहे याद करे उसको लाभ तो होगा, किन्तु जो अल्लाह का दिया हुआ है, उसका जो लाभ होगा वह अनुवाद में नहीं हो सकता,

जैसे अस्सलामु अलैकुम कहने पर 10 नेकी, व रहमतुल्लाह करने पर 20 नेकी और व बरकातुहू कहने पर 30 नेकी किंतु उसका अनुवाद कर दें तो न 10 न 20 न 30 मैं आदाब बजा लाया, आप पर सलामती हो, इससे वह लाभ नहीं होगा जो अस्सलामु अलैकुम कहने का होगा, इसी लिए अल्लह ने सलाम को इतना सरल कर दिया कि हर व्यक्ति कह सकता है चाहे किसी क्षेत्र का रहने वाला हो अल्लह का नियम है कि वह हर आम और लाभ परदा चीज़ को सरल कर देता है। इसी प्रकार ज़िक्र को भी सरल कर दिया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "सबसे ज़्यादा सवाब वाला ज़िक्र "लाइलाह इल्लल्लाह है।"

(तिर्मिज़ी)

यह कल्मा अन्य ज़िक्रों में सबसे अधिक सवाब वाला है, इसीलिए तसव्वुफ़ के हल्कों में जो अधिकांश कराया जाता है वह यही है, और इसको विशेष रूप में भी कर दिया जाता है, किन्तु इसमें जो गर्दन और शरीर को हिलाना है और सिर का झुकाना है या इस प्रकार की और चीज़ें, यह सब तदबीर के समान हैं, यह असल नहीं, किन्तु अब मामला उलटा हो गया है, सबलोग इन्हीं तदबीरों में उलझ गये, असल भूल गये, "लाइलाह इल्लल्लाह की ज़र्ब लगाने का यह लाभ है कि हमारे भीतर जो निश्चिन्तता है और असावधानी है वह दूर हो जाए, जैसे आदमी बहरा होता है, उसको बुलाना होता है तो ज़ोर से बुलाते हैं, इसी प्रकार हम बहरे हैं तो दिल को जगाने के लिए दिल पर जर्ब (चोट) लगाते हैं और ज़ोर से कहना पड़ता है, अगर हमारा दिल बेदार (जागरूक) हो तो इनतमाम चीज़ों की आवश्यकता ही नहीं, खुद ब खुद वे चीज़ें प्राप्त हो जाएंगी, इसीलिए अरबों और ग़ैर अरबों में अंतर है, अरबों का मामला यह है कि वे सीधे तौर पर अरबी समझते हैं और सुबह व शाम इतना अल्लाह का नाम लेते हैं कि उनका ज़िक्र खुद हो जाता है, और हम लोग गूँगे अजमी (ग़ैर अरब) हैं, हमारे मुँह से सलाम तक नहीं निकलता या तो पान खाते होते हैं तो मुंह बंद है, हाथ हिला रहे हैं, इशारा कर रहे हैं जबकि यह यहूदियों और ईसाइयों का तरीक़ा है। सुबह से शाम तक की दुआएं अरबों को याद हैं और अरबी जानने के कारण वे उसको समझ कर कहते हैं, इसीलिए उनको विशेष रूप से नसीहत की आवश्यकता नहीं है, और हमको तसबीहात की आवश्यकता पड़ती है, हम चलते फिरते नहीं कर पाते तो एक जगह बैठ कर करना पड़ता है।

सिर्फ ज़बान से ज़िक्र काफी नहीं—

'सिर्फ ज़बान से ज़िक्र काफी नहीं, बल्कि उसकी माअरिफत भी मिलनी चाहिए, लोगों ने आज शब्दों का नाम ज़िक्र रख लिया है, पता चला कि दस—दस हज़ार तस्बीहें हैं, बैठ कर सिर हिला रहे हैं, कोई लाभ उसका नहीं हो रहा है, क्योंकि वे गफ़लत से कर रहे हैं, हज़रत मुजद्दिद अलफे सानी रह0 लिखते हैं: जब आदमी सुब्हानल्लाह

(अल्लाह सब ऐब से पाक है) कहता है तो अल्लाह तआला तुरन्त आदेश देता है, इस बंदे के ऐब दूर कर दो और जब कहा अलहम्दुलिल्लाह (सारे कमाल और तारीफ़ें आपके लिए हैं) तो अल्लाह तआला ऊपर से कहता है, इसको कमाल देदो, अब जिस दर्जे का हमारा सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह होगा उसी दर्जे में हमारे ऐब दूर होंगे मनो सुब्हानल्लाह ऐबों को दूर करने का विर्द है, हदीस में आता है हर नमाज़ के बाद "सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर, दस--दस बार कोई पढ़ले तो उसके सारे पाप माफ़ हो जाएंगे, लेकिन शैतान भुला देता है, कोई इसकी पाबंदी नहीं कर पाता (अबू दाऊद)।

ज़िक्र कोई मामूली चीज़ नहीं, बहुत आला दर्जे की चीज़ है, किन्तु ज़िक्र ज़िक्र की तरह होना चाहिए, ज़बान से जब ज़िक्र होतो ध्यान भी हो, और जब ध्यान होगा तो काम बनेगा, हाँ यह अलग बात है कि कभी--कभी आदमी पर हमले का ज़ोर होता है तो तकल्लुफ़ से काम लेना पड़ता है, इसीलिए कुर्आन में है "जो लोग खुदा से डरने वाले हैं जैसे ही शैतान की ओर से उनको कोई खतरा आ जाता है तो वे याद में लग जाते हैं" (अल आराफ़ 201) सो यकाएक उनकी आँखें खुल जाती हैं, विशेष ध्यान देते हैं बढ़ा चढ़ा कर और तकल्लुफ के साथ तस्बीह व ज़िक्र करते हैं, जब शैतान का हमला हो तो न चाहते हुए भी अल्लाह का ज़िक्र हो और अल्लाह का नाम लिजिए, इसलिए कि हदीस में आता है कि जब अज़ान होती है तो शैतान बहुत बुरी तरह भागता है, यानी उसकी गत बन जाती है तो इससे ज़ाहिर है कि अज़ान देने वाले के दिमाग़ में हो या ना हो लेकिन शब्द जो उससे टकरा रहे हैं तो उसकी हालत खराब हो जाती है तो इसलिए तकल्लुफ़ से काम लेकर ज़िक्र किया जाए अल्लाह का नाम लिया जाए तो शैतान की हालत समाप्त हो जाएगी।

कुर्आन की तिलावत भी ज़िक्र है--

कुर्आन के बहुत से औसाफ़ (गुण) हैं, कुर्आन, फुर्कान, शिफ़ा किफायह वग़ैरह है, इसी प्रकार इसको ज़िक्र भी कहा गया है। "हमने ही ज़िक्र (कुर्आन) को उतारा और हमहीं इसकी रक्षा करेंगे" (अल् हिज्र 9) इससे मालूम यह हुआ कि कुर्आन की तिलावत हम इस अंदाज़ से करें कि ज़िक्र का गलबा हो तो हमारी हिफ़ाज़त होगी यहां "हमने कुर्आन को उतारा" या हमने फुर्क़ान को उतारा नहीं कहा गया बल्कि "हमने ज़िक्र को उतारा कहा गया" क्योंकि कुर्आन में सबसे बड़ी विशेषता है वह ज़िक्र की है हर आयत में अल्लाह का नाम आता है और अल्लाह ने अपनी याद के सिलसिले की जो आयतें ज़िक्र की हैं वे बहुत हैं, सारांश यह है कि कुर्आन पूरा का पूरा ज़िक्र है तो जब ज़िक्र के रूप में कुर्आन की तिलावत करेंगे तो हमारी रक्षा होगी, सूफियों और बुज़ुर्गों ने भी यह बात लिखी है कि कुर्आन से जो तरक्की होती है वह ज़िक्रों

से नहीं होती, ज़िक्रों से होने वाली तरक्की सुरक्षित नहीं और कुर्आन से तरक्की करने वाले कभी वापस नहीं होते और ज़िक्र से तरक्की करने वाला गिर जाता है, इसकी मिसाल भी दी की बालू इकट्ठा करके दीवार बनाएं वह है ज़िक्र की तरक्की, और ईंट की दीवार वह है कुर्आन की तरक्की बालू को इकट्ठा करना और दीवार बनाना आसान है, रोड़ियाँ और ईंट से बनाना और चुनना मुश्किल है और जो मुश्किल होता है वह मज़बूत होता है।

ज़िक्र में मुर्शिद की ज़रूरत–

हज़रत थानवी रह0 ने फ़रमाया "बिना ज़िक्र के कुछ नहीं होता, एक साहब ने कहा जब बिना ज़िक्र के कुछ नहीं होता तो हम ज़िक्र कर लेंगे, तो उन्होंने कहा, ज़िक्र के लिए ज़रूरी है कि कोई सरपरस्त (संरक्षक) हो, फरमाया ज़िक्र तलवार की तरह है कभी अपना भी सिर कट जाता है। ऐसे ही ज़िक्र भी है, फायदा तो इसका बहुत है लेकिन संभालने वाला चाहिए, कभी आवाज़ सुनाई पड़ने लगती है, कभी बिजली दिखाई देने लगती है बस आदमी उसमें खो जाता है समझता है खुदा को देख लिया, जब कि यह हो ही नही सकता अगर कोई यह दावा करे तो वह शैतान है बहरहाल ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, और हदीस में आता है ज़िक्र करने से आदमी बहुत आगे निकल जाता है (मुस्लिम)।

एक सहाबी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, रास्ते तो बहुत हैं कोई ऐसी चीज़ आप बताएं जिसको मैं मज़बूती से थाम लूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "बस तुम्हारी ज़बान ज़िक्र से तर रहे" (तिर्मिज़ी) तर उसी समय होगी जब उसका सम्बंध दिमाग़ से होगा। ज़बान, दिल, दिमाग के साथ हो तब ज़िक्र ज़िक्र, होगा उस ज़माने में यह बात समझ में आ जाती थी, अब यह उल्टा हो गया है। शाह वलीउल्लाह साहब देहलवी ने लिखा है, अगर सिर्फ़ ज़बान का ज़िक्र है तो कोई फायदा नहीं, जितना ध्यान ताक़तवर होगा उतना ही फायदा होग। सारा मसला दिमाग़ से सम्बंध का है।

मासूर ज़िक्र की फज़ीलत–

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया " क्या तुमको ज़न्नत के खज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बता दूँ? उन्होंने कहा ज़रूर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बता दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "लाहौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह" (बुख़ारी) ताक़त व कूव्वत किसी चीज़ से बचने की किसी चीज़ के करने की अल्लाह ही के हाथ में है, हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले से कहते हैं कि जिसने "लाइलाह इल्लल्लाहु, लाशरीक लहू लहुलमुल्कु वलहुल हम्द वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर" दस बार पढ़ा तो उस व्यक्ति के बराबर हो गया जिसने हज़रत इस्माईल अ0 की संतान में से चार व्यक्तियों को आज़ाद किया। (बुख़ारी शरीफ)

शेष पृष्ठ..... 22 पर

सब्र व शुक्र मोमिन के विशिष्ट गुण

—मौलाना मोहिबुल्लाह क़ासमी

जब से दुनिया का अस्तित्व है, उस समय से आज तक जितने भी इन्सान पैदा हुए, उनको रात–दिन धूप–छांव की तरह, सुख–दुख, खुशी और गम का भी सामना करना पड़ा है। उनमें बहुत से लोग अपनी मुसीबत और परेशानी से घबरा जाते हैं, और बहुत से लोग धन–दौलत से परिपूर्ण विलासितापूर्ण ज़िन्दगी की गहराइयों में ऐसे डूब जाते हैं और वे यह भूल जाते हैं कि इससे पहले वे क्या थे। इस्लाम धर्म ज़िन्दगी के सारे मामलों में इन्सानों की तरह मार्गदर्शन करता है।

इस्लाम धर्म, इन्सान को ग़म और खुशी दोनों अवसरों पर सब्र व शुक्र की ताकीद की है। सब्र का मूल अर्थ है रुकना। अर्थात अपने नफ़्स (ज्ञानेन्द्रियों) को घबराहट, निराशा और उदासी से बचाकर अपने मौक़िफ़ (स्थान) पर जमाये रखना कुर्आन में अमलन इसका अर्थ यह होता है कि बन्दा पूरे विश्वास व यक़ीन के साथ अल्लाह तआला के अहद पर क़ायम रहे और उसके वादों पर विश्वास रखे।

सब्र इन्सान के उस प्रशंसनीय कार्य का नाम है, जिसका इज़हार विभिन्न परिस्थितियों में अनेकों तरह से हाता है। जिसका विवरण निम्नलिखित है– किसी मुसीबत व परेशानी के समय अपने नफ़्स पर क़ाबू रखना। मैदाने जंग में डटे रहना। नफ़्स को विलासिता से दूर रखना। क्रोध की हालत में नफ़्स को काबू में रखना। अवैध तरीक़े से काम वासना सम्बंधी इच्छाओं की पूर्ति से बचना। बातचीत में राज़दारी का ख़्याल रखना इत्यादि। अल्लाह तआला सब्र के बारे में कुर्आन मजीद में फ़रमाता है "सब्र (धैर्य) और नमाज़ से मदद लो, बेशक नमाज़ एक बड़ा ही मुश्किल काम है, किन्तु उन आज्ञाकारी बन्दों के लिए मुश्किल नहीं है जो समझते हैं कि आख़िरकार उन्हें अपने रब से मिलना और उसी की ओर पलट कर जाना है। (कुर्आन 2:45, 46)

जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उससे डरते हैं, उन्हें किसी तरह का भय नहीं होता है। वह अपने हाल पर सब्र व धैर्य के साथ जमे रहते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी का अध्ययन करें, तो विदित होगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने जीवन में कितनी मुसीबत व परेशानियों को सहा। जब मक्के वालों ने आपका और आपके साथियों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया, तो आप अपने पूरे क़बीले के साथ 'शाबे अबी तालिब' में शरण ली। अपने साथियों के साथ तीन वर्ष तक दुख और मुसीबत सहते रहे। इन सारी परेशानियों के बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़ुदा के वादे के अनुसार सब्र करते रहे। आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है "जान लो कि सब्र के साथ सफलता है और मुसीबत के साथ कुशादगी है और तंगी के साथ आसानी है"। (तिर्मिज़ी)

शुक्र व कृतज्ञता की भावना इन्सान के अन्दर दासता व सेवाभाव को उजागर करने में सहायक सिद्ध होती है, जो बन्दे को अल्लाह के करीब करती है। इसलिए जब इन्सान की परेशानी दूर हो जाए और उसे अल्लाह की तरफ़ से नेमत व राहत मिल जाए, तो उस पर ज़रूरी है कि वह अपने रब को न भूले, बल्कि उसका शुक्र अदा करे, जिसका इज़हार कथनी और करनी दोनों से होना चाहिए। अल्लाह तआला कुर्आन मजीद में फरमाता है "अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला इस हालत में कि तुम कुछ न जानते थे। उसने तुम्हें कान दिये, आंखें दीं और सोचने वाल दिल दिये, इसलिए कि तुम शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनो।

(कुर्आन 16:78)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला का बहुत ज़्यादा शुक्र अदा करते थे। आपको इबादत में तल्लीन देखकर सहाबा रज़ि0 ने सवाल किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप इतनी परेशानी क्यों उठाते हैं, जिसके जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं?

(मुस्लिम)

यह शुक्र कैसे पैदा हुआ, इसके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि बन्दा थोड़ी सी चीज़ पर भी अल्लाह का शुक्र अदा करे। लोगों के एहसान पर उसका शुक्र अदा करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है "जो थोड़े पर शुक्र अदा नहीं करता वह ज़्यादा पर भी शुक्रगुज़ार नहीं होगा। जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता, वह अल्लाह का भी शुक्रगुज़ार नहीं होगा। अल्लाह की नेमतों को बयान करना शुक्र है। जमाअत में मिलकर रहना रहमत है और अलग–अलग रहना अज़ाब है।"

(मुस्नद अहमद)

अल्लाह तआला ने बन्दों को यह अधिकार दिया है कि वह कौन सी राह अपनाये। अगर वह शुक्र की राह अपनाएगा, तो यह उसके हक में अच्छा होगा। इसके विपरीत अगर उसने कुफ़्र की राह अपनायी तो यह उसके लिए कष्टदायक और हलाकत होगी। अल्लाह तआला कुर्आन में फ़रमाता है "हमने उसे मार्ग दिखा दिया, चाहे कृतज्ञता दिखाने वाला बने या इन्कार करने वाला"।

(कुर्आन 76:3)

❖❖❖

ज़िक्र क़ुर्आन और हदीस .....

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़ कर कोई हकीम नहीं, जो नुस्खे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिये हैं, जो ज़िक्र आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं, उसमें जो फायदा है वह किसी और चीज़ से प्राप्त नहीं हो सकता।

❖❖❖

स्वतंत्रता दिवस

—इदारा

पूरे भारत (हिन्दोस्तान) में हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है, अर्थात देश के स्वतंत्र होने की खुशी मनाई जाती है। देश तो स्वतंत्र हुआ था 15 अगस्त 1947 ई0 को परन्तु हर वर्ष उस दिन की याद में खुशी मनाई जाती है।

1947 ई0 से पहले हमारा देश ब्रिटिश सामराज में था। हम पर समुद्र पार ब्रिटेन के अंग्रेज़ राज करते थे। उनसे पहले यहां की सत्ता हम मुसलमानों के हाथ में थी मुसलमानों ने यहाँ 1290 ई0 से 1857 ई0 तक अर्थात लगभग 500 वर्ष राज किया। यहाँ की हिन्दू मुस्लिम प्रजा अपना राज समझती थी, मुस्लिम शासक यहां के वासियों को अपना समझते थे। मुसलमान शासकों द्वारा बनाये गये दुर्ग तथा भवन और उनकी बनाई लम्बी सड़कें मन्दिरों तथा मस्जिदों के निर्माण इस बात का साक्षी हैं। सन् 1615 ई0 में पहली बार अंग्रेज़ सर टाम्स भारत आया। और कुछ उपहारों के साथ सम्राट जहाँगीर से मिला और भारत में व्यवपार की अनुमति प्राप्त की। उस समय देश रियासतों में बँटा हुआ था। अधिकांश भाग

रब के अपने गुन हम गाएं
और स्वतंत्रता दिवस मनाएं
ज्ञान कला से देश को अपने
स्वक्ष बनाएं और समृद्ध बनाएं
उन्नति के आकाश पे पहुंचें
फिर भी रब के गुन हम गाएं
वैध कमाएं वैध ही खाएं
सत्य मार्ग पर चलें चलाएं
सवतंत्रता मानवता को दें हम
दानवता को दूर भगाएं
रब से मांगें भीख यह हम सब
रहें स्वतंत्र और रब को गाएं

केन्द्र के अन्तर्गत था। पहले यह अंग्रेज़ भारत में व्यापार करते रहे उसमें बड़ी उन्नति की और बड़े धनवान हो गये यहाँ तक की प्रॉपर्टियां खरीदने लगे अपनी ताकत बराबर बढ़ाते रहे औरंगज़ेब के देहान्त के पश्चात उन्हींने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली और मुगल शासन की कमज़ोरी से फायदा उठाते हुए "लड़ाओ और शासन करो" के गन्दे नियम को अपनाते हुए देश पर कब्ज़ा जमा लिया ईस्ट इण्डिया कम्पनी की हुकूमत काईम हो गई मुग़ल बादशाह ज़फर शाह को हुकूमत दिल्ली लाल दुर्ग में सीमित हो कर रह गई। इस बुरे हाल से पूरा देश ब्याकुल था परिणाम स्वरूप 1857 मे पूरे देश में विद्रोह (गदर) हुआ। लगता था कि अंग्रेजों का भारत में विनाश हो जाएगा परन्तु बड़े खेद की बात यह हुई कि देश के जवानों से कुछ चूक हुई जिसके नतीजे में संग्राम विफल हुआ। यही नहीं अपितु इस विद्रोह में लाखों देशवासी मारे गये जिनमें 95 प्रतिशत मुसलमान मारे गये उनकी सम्पति समाप्त कर दी गई कितनों को काला पानी भेज दिया गया। उधर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्थान पर ब्रिटेन के राज्य में भारत ले लिया गया और अंग्रेजों की सत्ता पहले से अधिक दृढ़ हो गई।

यह सब हुआ परन्तु देश के लीडरों ने हिम्मत न हारी स्वतंत्रता संग्राम (आज़ादी की तहरीक़) बराबर चलता रहा। हमारे नेता अंग्रेज़ों के नौकरों के डण्डे खाते और जेल जाते रहे परन्तु अपना आन्दोलन न छोड़ा और पंडित जवाहर लाल नहरू, महात्मा गाँधी, अबुल कलाम आज़ाद, अशफाकुल्लाह खाँ जैसे सैकड़ों हिन्दु मुस्लिम नेताओं की कोशिशें सफल हुई और ब्रिटेन शासन भारत को स्वतंत्रता देने पर विवश हुआ और 14–15 अगस्त 1947 की रात में शासन सम्बन्धी सभी अंग्रेजों ने भारत छोड़ दिया 15 अगस्त को सारे भारत में खुशियां मनाई गईं। उसी की याद में हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाने की राष्ट्रीय परम्परा चली आ रही है। हम भी आज स्वतंत्रता की खुशी मना रहे हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात– स्वतंत्रता के पश्चात देश ने जो उन्नति की है उसे चमत्कार ही कहा जा सकता है। मुझ बूढ़े ने तो दोनों काल देखे हैं। सब से बड़ी उन्नति तो जनसंख्या की है सवतंत्रता के समय देश की जनसंख्या 40 करोड़ थी आज 125 करोड़ के लगभग है 1947 के मुकाबले में अब देश में अनाज का उत्पादन दस गुना बढ़ा है। यह सब विज्ञान तथा टेक्नॉलोजी की देन है। आज हम जिस प्रकार के भवनों में रह रहे हैं। जो पहन और खा रहे हैं। जो सामान प्रयोग कर रहे हैं, जिस प्रकार की सड़कें देख रहे हैं, गावों में विद्युत की जगमगाहट देख रहे हैं आजादी से पहले इन सब को स्वप्न में भी नहीं देखा गया था। मैंने मार्च 1948 ई0 में मिडिल पास किया तो

अपने क्षेत्र के कई गावों के बीच अकेला मिडिल पास था। आज गांव गांव स्कूल और कालेज हैं। हर गांव में ग्रेजुऐट पाए जाते हैं, हर गांव में टेक्टर, चार पहिए वाली गाड़ियाँ दो पहिए वाली मोटर साइकिलें मौजूद हैं। हम लोग देहातों में 20–25 कि0मी0 के फासले के लिए साइकिल भी न रखते थे। अपितु सारा रास्ता पैदल तय करते थे। आज कोई एक कि0मी0 भी पैदल नहीं चलता है। दवा इलाज की जो सुविधाएं आज उपलब्ध हैं उनको हम 1947 से पहले सोच भी न सकते थे कि मोबाईल, कम्प्यूटर और इण्टरनेट को तो आज भी लोग जादू समझते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह सारी उन्नति विज्ञान और टेक्नालोजी की देन है परन्तु यदि सवतंत्रता न मिलती तो इनसब से हम वंचित रहते।

इन सब खुशियों के साथ खेद की बात यह है कि अपराध तथा अपराधियों की विधियों में भी खूब उन्नति हुई है। निसन्देह अंग्रेज़ हमारे देशवासियों का शोषण कर रहे थे हमारे देश को लूट रहे थे, हमारे देश के सामानों को ब्रिटेन भेज रहे थे। देश की उन्नति मे बाधक थे इन सब के बावजूद उनके डिसिप्लेन की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता चोरी डकैती नाम की न थी। अगर कहीं चोरी होती तो पूरे क्षेत्र के चोरों कि शामत आ जाती थी। एक डकैती पर पूरा इलाक़ा हिल के रह जाता। एक क़त्ल पर कातिल का पूरा खानदान तबाह हो जाता था। आज चोरों और डकैतों के पास आधूनिक हथियार हैं। दिन दहाड़े शहरों में डकैती होती है घर के बग़ल वाला उस वक़्त जान पाता है जब डकैत जा चुके होते हैं। अब चोर को घेरने से लोग डरते हैं। इसलिए कि उसके हाथ में पिस्तौल हो सकता है। यह पूरा हत्या का अपराध विज्ञान ही की देन है, यह बाजारों, रेलवे, बसों यहा तक कि मस्जिदों और मन्दिरों में बम विस्फोट विज्ञान ही की देन है। यह गुर्दा चोरी भी विज्ञान की देन है। यह सामोहिक दुष कर्म, यह पाँच छः वर्ष की बच्चियों के साथ दुष कर्म इसी उन्नति काल की देन है। यह करोडों की रिशवत यह अरबों के घपले इसी काल की देन हैं। आज शासन और समाज हैरान है कि इन उन्नतिशील अपराधों पर कैसे काबू पाया जा सकता है। इस उन्नति काल ने पालनहार से आस्था को निकाल कर रख दिया है धर्म केवल परम्परा बन कर रह गये हैं इन हालात में भी हम निराश नहीं हैं और सभी सज्जन पुरुषों से आग्रह करते हैं कि वह उठें आगे आएं समाज को धर्म निष्ठ बनाएं। एक–एक व्यक्ति से मिल कर उसके ह्रदय में ईशभय (खुदा का खौफ़) पैदा करें। साहसी की खुदा मदद करता है, अगर दिल लगा कर निरंतर कोशिश जारी रही तो आशा है कि समाज में सोच की काया पलट हो जाएगी और इस स्वतंत्रता का वास्तविक लाभ उठाया जा सकेगा।

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

बरकत तथा नेकनामी हेतु नबियों तथा सहाबियों के नामों को प्राथमिकता–

नामों के सम्बन्ध में एक मुसलमान का ध्यान सर्वप्रथम स्वाभाविक रूप से अपने पैग़म्बर, उसके महान अनुयायियों एवं साथियों और उसके परिवार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ओर जाता है और वह बरकत और शकुन हेतु उनके नामों को प्रधानता देता है। इसीलिये हिन्दुस्तान में मुहम्मद तथा अहमद नामों का बाहुल्य है। अनेक स्थानों पर मुहम्मद तथा अहमद को मिलाकर नाम रक्खा जाता है और एक ही आदमी का नाम 'मुहम्मद अहमद' होता है। जिनका अक़ीक़े का नाम 'मुहम्मद' नहीं होता वह भी शुभ मान्यता हेतु अपने नाम से पहले 'मुहम्मद' लगाते हैं। उदाहरणार्थ मुहम्मद सईद, मुहम्मद अजीज़, मुहम्मद हुसैन आदि। पैग़म्बर साहब के नाम के बाद पुरुषों में सहाबियों[1] तथा अहल–बैत[2] और स्त्रियों में पैग़म्बर साहब की बीबियों तथा बेटियों के नाम अधिक प्रचलित हैं।

नामों के संबंध में यह बात अरुचिपूर्ण न होगी कि यद्यपि पैग़म्बर साहब का बंशगत संबंध और मुसलमानों का मानसिक, ऐतिहासिक सम्बन्ध इस्माईली शाखा से है और बनी इस्माईल[3] तथा बनी इसराईल (अरबों तथा यहूदियों) में दूरी तथा मतभेद आरम्भ से चला आ रहा है। परन्तु चूंकि मुसलमानों के अक़ीदे (विश्वास) में खूदा के समस्त पैगम्बर सम्मानीय एवं आदर्णीय हैं और उन पर ईमान लाना (इस का विश्वास कि वे सब खुदा के सच्चे पैगम्बर हैं) अनिवार्य है, इस बात की उपेक्षा करते हुए कि वह इस्माईली शाखा से सम्बन्धित हैं अथवा इसराईली शाखा से। इसलिए मुसलमान, नामों के बारे में, वंशानुक्रम (Heredity) पक्षपात का शिकार नहीं, इसी का परिणाम है कि केवल हिन्दुस्तान में लाखों की संख्या में ऐसे मुसलमान होंगे जिनका नाम इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद के नाम पर रक्खा गया होगा और वह इस्हाक़, याकूब, यूसुफ़, दाऊद, सुलेमान, मूसा, हारून, ईसा, इमरान, जक़रिया, और यहया कहलाते हैं, और सब इसराईली शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार औरतों में मर्यम्, सफ़ूरा तथा आसिया नाम पाये

---

1. वह मुसलमान जिन्होंने पैगम्बर–ए–इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा हो।
2. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के सदस्य।
3. पैग़म्बरों को श्रेणी में हज़रत 'इब्राहीम' अलैहिस्सलाम का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है। उनके दो पुत्र थे, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, तथा हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा अधिकांश अरबों का वंशगत सम्बन्ध हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से है और यहूदियों का वंशगत सम्बन्ध हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम से है अतः अधिकांश अरब बनी इस्माईल (इस्माईल के पुत्र) और यहूदी बनी इसराईल (इसराईल के पुत्र) कहलाते हैं।

जाते हैं, जो इसराईली शाखा की प्रतिष्ठत एवं सम्मानित स्त्रियों के नाम हैं।

वह नाम जिसमें शिर्क कि मिलावट है–

नामें के सम्बन्ध में हिन्दुस्तानी मुसलमान विभिन्न रूप से भारत के विशिष्ट वातावरण, परिस्थिति तथा असाधारण व्यक्तियों को ईश्वर का अवतार अथवा उसी के समान श्रद्धा रखने की प्रवृत्ति से प्रभावित हुए हैं, और यहां अधिकांश इस प्रकार के नाम मिलते हैं जो भारतवर्ष के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महापुरुषों से सम्बन्धित है और वह कभी कभी तौहीद के महत्वपूर्ण विश्वास के विरुद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ मुसलमान का यह दृढ़ विश्वास है कि जीविका प्रदान करने वाला, सन्तान पैदा करने वाला तथा पापों के प्रति क्षमा प्रदान करने वाला एक मात्र खुदा ही है। परन्तु यहां नामों में उपर्युक्त गुणों को अनेक महापुरुषों, वलियों, इमामों तथा अहले–बैत की ओर सम्बन्धित किया गया है। यथा मदार बख़्श[1], क़लन्दर बख़्श, साबिर बख़्श, अली बख़्श, हुसेन बख़्श, अब्दुल[2] हसन और अब्दुल हुसेन[3] आदि।

हज़रत नबीये पाक पर ईमान जो भी लाएगा।
वह फ़ज़्ल से अल्लाह के जन्नत में जगह पाएगा
शिर्क की हालत में मर कर जो यहां से जाएगा
आग है उसके लिए जन्नत नहीं वह पाएगा
छोड़ कर सुन्नत को जो भी बिदअतें अपनाएगा
शक नहीं इसमें कि वह दोज़ख़ में डाला जाएगा
हज़रत नबीये पाक ही बेशक हैं हम सब के इमाम
हैं वही ख़ैरुल बशर और हैं वही ख़ैरुल अनाम
जो बात मैंने की यहां वह है किताबुल्लाह में
वह है कलामुल्लाह में, क़ौले रसूलुल्लाह में
यारब नबीये पाक पर लाखों दुरूद भेज
लाखों दुरूद भेज और लाखों सलाम भेज
समय वस्तु अनमोल है निश्चय पूर्वक जान
तू उसे ज्ञानी कहे जिसमें हो यह ज्ञान
सत्य है बीता समय फिर लौट कर आता नहीं
फिर समय पर ध्यान देना क्यों तुझे आता नहीं
काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
दूत मृत्यु का आएगा, छोड़ चलेगा सब

❖❖❖

1. बख़्श का अर्थ है, अमुक द्वारा प्रदान किया हुआ जैसे मदार बख़्श (मदार एक बुजुर्ग) का अर्थ है मदार द्वारा दिया हुआ।
2. हसन का बन्दा।
3. अनेक मुसलमान विद्वानों ने इस प्रकार के नामों का घोर विरोध प्रकट किया है, हिन्दुस्तान के सुप्रसिद्ध मुजाहिद और धर्म सुधारक हज़रत सय्यद अहमद शहीद (1246 हि0– 1820 ई0) के बारे में कहा जाता है कि वह इस प्रकार के नामों को तुरन्त बदल देते थे।

बच्चों के पालन-पोषण करने का तरीक़ा

—हाशमा अन्सारी

यह बहुत ही ध्यान रखने की बात है, क्योंकि बच्पन में जो आदत भली—बुरी हो जाती है वह उम्र भर नहीं जाती इसलिए बचपन से जवान होने तक उन बातों का तरतीब वार ज़िक्र किया जाता है।

❖ नेकबख़्त दीनदार औरत का दूध पिलायें दूध का बड़ा असर होता है।

❖ औरत की आदत है कि बच्चों को कहीं सिपाही से डराती है कहीं और डरावनी चीजों से, यह बुरी बात है उससे बच्चों का दिल कमज़ोर हो जाता है।

❖ उसके दूध पिलाने के लिए और खाना खिलाने के लिए वक्त मुकर्र रखो की वह स्वस्थ रहे।

❖ उसको साफ स्वच्छ रखो कि उससे तन्दुरुस्ती रहती है।

❖ उसका बहुत बनाव श्रंगार मत करो।

❖ अगर लड़का हो तो उसके सर पर बाल मत बढ़ाओ।

❖ अगर लड़की है तो उसको जब तक समझ न आ जाये जेवर मत पहनाओ उससे एक तो उनकी जान का ख़तरा है दूसरे बचपन से ही ज़ेवर का शौक दिल में होना अच्छा नहीं।

❖ बच्चों के हाथ से गरीबों को खाना कपड़ा पैसा और ऐसी चीज़े दिलवाया करो, इसी तरह खाने पीने की चीज़ें उनके भाई बहनों या और बच्चों को बटवाओ ताकि उनको सखावत की आदत हो, मगर यह याद रखो कि तुम अपनी चीज़ें उनके हाथ से दिलवाया करो खुद जो चीजें उन्हीं की हों उसका दिलवाना किसी को कोई एतिराज न हो।

❖ ज़्यादा खाने वालों की बुराई उसके सामने किया करो मगर किसी का नाम ले कर नहीं बल्कि इस तरह की जो कोई बहुत खाता है लोग उसको बैल जानते हैं।

❖ अगर लड़का हो तो सफेद कपड़े की चाह उसके दिल में पैदा करो, और रंगीन वस्त्रों से उसको नफ़रत दिलाओ कि ऐसे कपड़े लडकियां पहनती हैं तुम माशाअल्लाह मर्द हो, हमेशा उसके सामने ऐसी बातें किया करो।

❖ उसकी सब जिद पूरी मत करो, उससे उसका मिजाज बिगड़ जाता है।

❖ चिच्ला कर बोलने से रोको, खास कर अगर लड़की हो तो चिल्लाने पर खूब डाँटो वरना बड़ी हो कर वही आदत बन जायेगी।

❖ जिन बच्चों की आदत खराब है, या पढ़ने लिखने से भागते हैं तो उनके पास बैठने उनके साथ खेलने से उनको रोको।

❖ इन बातों से उसको नफरत दिलाती रहो, गुस्सा, झूठ बोलना, किसी को देख कर जलना, चोरी, चुगली खाना, बेफायदे बहुत सारी बातें करना, बे बात हँसना,

ज़्यादा हँसना, धोखा देना, भली बुरी बात का सोचना, और जब उन बातों में से कोई बात हो जाये फौरन उसको रोको।

❖ अगर कोई चीज़ तोड़ फोड़ दे या किसी को मार बैठे मुनासिब सजा दो ताकि फिर ऐसा न करे ऐसी बातों में प्यार दुलार हमेशा के लिए बच्चे को बिगाड़ देता है।

❖ बहुत सुबह मत सोने दो।

❖ सुबह जागने की आदत डालो।

❖ जब सात वर्ष की उम्र हो जाये नमाज़ की आदत डालो।

❖ जब मकतब में जाने के काबिल हो जाये पहले कुर्आन मजीद पढ़ाओ।

❖ जहाँ तक हो सके दीनदार उस्ताद से पढ़ाओ। मकतब में जाने में कभी आलस्य मत करो।

❖ किसी–किसी वक्त उनको नेक लोगों की बातें बताया करो।

❖ उनको ऐसी किताबें मत देखने दो जिनमें गन्दी तस्वीरें या शरअ़ के खिलाफ़ मज़मून या और गन्दे किस्से कहानी छपे हों।

❖ ऐसी किताबें पढ़ो जिनमें दीन और दुनिया की बातें आ जायें।

❖ मकतब से आ जाने के बाद दिल बहलाने के लिए उसको खेलने की इजाजत दो, लेकिन खेल ऐसा हो जिसमें कोई गुनाह न हो चोट लगने का अन्देशा न हो।

❖ आतिश बाजी या बाजा या फिजूल चीज़ लेने के लिए पैसा मत दो।

❖ खेल तमाशे दिखाने की आदत मत डालो।

❖ औलाद को जरूर कोई हुनर सिखा दो जिससे जरूरत और मुसीबत के वक्त चार पैसा हासिल करके अपने और अपने बच्चों का गुज़ारा कर सके।

❖ लड़कियों को इतना लिखना सिखा दो कि जरूरी ख़त और घर का हिसाब किताब रख सकें।

❖ बच्चों को आदत डालो की अपना काम अपने हाथ से किया करें अपाहिज और सुस्त न हो जायें, उनको कहो रात को अपना बिस्तर खुद लगायें सुबह उठ कर तह लगा कर रखें। कपड़ें साफ हो या गन्दे उन्हें ऐसी जगह न रखें जहाँ चूहे का डर हो।

❖ लड़कियों को ताकीद दो की जो ज़ेवर तुम्हारे बदन पर है रात को सोने से पहले और सुबह को जब उठो देख भाल लिया करो। जो काम खाने पकाने, सीने, पिरोने, बुनाई, रंगाई का काम घर पर हो रहा हो उसको गौर से देखें और उसको सीखने की कोशिश करें।

❖ जब बच्चों से कोई बात खूबी की ज़ाहिर हो उस पर खूब शबाशी दो प्यार करो, बल्कि उसको इनाम दो ताकि उसका दिल बढ़े और जब उसकी कोई बुरी बात देखो अकेले में उसको समझाओं की देखो यह बुरी बात है देखने वाले दिल में क्या कहते होंगे, और जिस जिस को खबर होगी वह दिल में क्या कहेगा, खबरदार ऐसा मत करना अच्छे बच्चे ऐसा काम नहीं करते हैं। और फिर वही काम करे तो मुनासिब सजा दो।

शेष पृष्ठ..... 37 पर

दुष्कर्म का उपचार

—अब्दुल रशीद सिद्दीकी नसीराबादी

जिन स्रोतों से विष मिलता है, सच कहता हूँ सच कहने दो।
नेता, अभिनेता, कवि, लेखक, भारत को भारत रहने दो।।
दुष्कर्म की घटनायें तो, रुकने का नाम नहीं लेती।
पाश्चात्य सभ्यता हावी है, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
नेता, अभिनेता अभिनय कर, जिस रंग-रूप में आते हैं।
नर नारी बहैं उसी रंग में, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
शेर-शयरी, गद्य-पद्य में, काम वासना बहती है।
साहित्य समाज का दर्पण है, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
टी0वी0 और वीडियो से, ब्यभिचार प्रदर्शित होता है।
दुष्कर्म की शिक्षा मिलती है, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
दुष्कर्म तो एक अंधेरा है, चिल्लाने से वह जाय नहीं।
तुम दीप जलाओ भग जाये, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
जागो समाज के कर्णधार, अब सोने का यह समय नहीं।
अब आग लगी है धरती पर, सच कहता हूँ सच कहने दो।।
अब विश्व समाज कलंकित है, सिद्दीकी भी तो चिंतित है।
दुष्कर्म मिटाओ धरती से, सच कहता हूँ सच कहने दो।।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः सर और दाढ़ी के बालों में काली मेंहदी का खिज़ाब लगाना दुरुस्त है या नहीं? क्या इस बारे में हदीसे नबवी सल्ल0 में वईद आई है?

उत्तरः काले खिज़ाब का इस्तेमाल सर या दाढ़ी के बालों में मकरूह तहरीमी है, हज़रत अबू दरदा से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जो काला खिज़ाब इस्तेमाल करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उसके चेहरे को काला करे देंगे"।
(तुहफतुल अहवजी 355/5)

अबू दाऊद की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो काला खिज़ाब इस्तेमाल करेगा वह जन्नत की बू भी न सूंघ सकेगा।
(सुनने अबू दाऊद 42/12)

प्रश्नः अगर खिज़ाब की सियाही मुकम्मल न हो बल्कि सियाही माइल हो तो क्या उस का इत्तेमाल भी मना है?

उत्तरः हदीस में जिस काले खिज़ाब को मना किया गया है और वईद आई है उससे मुराद वह स्याह खिज़ाब है जो पूरे तौर पर स्याह हो अगर पूरी तरह स्याह न हो बल्कि मेंहदी का कलर हो और स्याही माइल हो तो उस का इस्तेमाल दुरुस्त है, हज़रत अबू ज़र की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेंहदी और कतम का खिज़ाब इस्तेमाल करने की तरगीब दी है।

(जामे तिर्मिज़ी 1806)

प्रश्नः कुछ लोग कहते हैं कि जिस की बीवी जवान हो उसको सिर पर काला खिज़ाब लगाने की इजाज़त है इस बारे में अस्ल हुक्म क्या है?

उत्तरः हदीस शरीफ में स्याह खिज़ाब इस्तेमाल करने की मनाही बगैर किसी क़ैद और शर्त के आई है, इमाम अबू युसुफ का एक कौल मिलता है कि मुजाहिदीन के लिए मैदाने जिहाद में जाने के वक्त और जवान बीवी की ख़्वाहिश के पेशेनज़र इसकी इजाजत है लेकिन इस बारे में जमहूर उलमा की राय यही है कि बालों में स्याह खिज़ाब लगाना दुरुस्त नहीं है। (अल मुगनी 67/1)।

प्रश्नः एक साहब कहते हैं कि मर्दों के लिए स्याह सुर्मा लगाना दुरूस्त नहीं है क्या यह सही है?

उत्तरः स्याह सुर्मा अगर बतौरे इलाज इस्तेमाल किया जाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं है, हदीसे नबवी में जहाँ सुर्मे के इस्तेमाल का ज़िक्र है उसमें स्याह और गैर स्याह का ज़िक्र नही है बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असमद का हुक्म फरमाया और उसे आँखों की रौशनी और बाल बड़े होने का जरीया बताया, तिर्मिज़ी की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया असमद

का सुर्मा लगाओ इसलिए कि यह आँखों को रौशनी देता है और बालों को उगाता है। (जामे तिर्मिज़ीः 1357)

इसलिए स्याह सुर्मा के इस्तेमाल में बीनाई की इस्बात की गरज़ से कोई हरज नहीं है। हाँ अगर बतौर ज़ीनत स्याह सुर्मा इस्तेमाल किया जाय तो मर्दों के लिए यह कराहियत से खाली नही।

प्रश्नः आजकल मुसलमान औरतें अपनी पेशानी पर चमकी (टिकली) लगाती हैं और उसे फैशन समझती हैं क्या बतौर जीनत शरअ़ में इसकी इजाजत है?

उत्तरः मुसलमान औरतों के लिए माथे पर चमकी लगाना दुरुस्त नही है बल्कि यह दर अस्ल हिन्दू ख़्वातीन का तरीक़ा है और उनके यहां यह सुहाग की अलामत समझी जाती है जाहिर बात है कि यह गैर मुस्लिमों की खास अलामत की चीज़ है। बतौर जीनत भी इसे इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जिसने किसी क़ौम की मुशाबहत इख़्तियार की वह उसी में से है" (सुन्ने अबी दाऊदः 40)।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि गैरों की मुशाबहत इख़्तियार करने की इजाज़त नहीं है। चाहे जीनत के तौर पर हो।

प्रश्नः आजकल मुसलमान औरतों में ऐसे नक़ाब का रवाज़ बढ़ता जा रहा है जिसमें आँखें खुली रहती हैं क्या इस्लामी शरअ़ में इस किस्म के नक़ाब की इजाजत है?

उत्तरः नक़ाब का मक्सद कामिल परदा और अपने को हर तरह से महफ़ूज़ रखना है, ऐसा नक़ाब जो पुरकशिश और जाज़िबे नज़र हो मक्सद के खिलाफ है अगर आँख के हिस्से में कपड़े की ऐसी जाली हो जिससे चलते वक्त देखने में दिक्कत न हो तो यह बेहतर है अगर जाली से चलने में दिक्कत हो और आँख के बकद्र नक़ाब का हिस्सा खुला हो तो इसकी इजाज़त है, फुक़हा ने इस मसअले पर गुफ्तगू की है और इस की इजाज़त दी है लेकिन यह अगर महज़ डिजाइन और फैशन के तौर पर हो तो उससे बचना चाहिए।

प्रश्नः आम तौर पर देखा जाता है कि किसी सरकारी मुहकमे (विभाग) में इण्टरव्यू में कामयाब हो जाने और सेलेक्शन कमेटी की तरफ़ से नामज़द कर दिये जाने के बावजूद बिना रिशवत तकर्रुरी (अप्वाइन्टमेंट) नहीं मिल पाता है तो ऐसी सूरत में रिशवत देकर नौकरी हासिल करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः इण्टरव्यू में काम हो जाने और सेलैक्शन कमेटी की तरफ से नामज़द हो जाने के बाद मुलाज़मत का हक़ हासिल हो जाता है अगर यह हक बिना रिशवत के नहीं मिल पा रहा है तो मजबूरन रिशवत देने में गुनाह नहीं होगा। लेकिन रिशवत लेने वाला गुनहगार होगा। अल्लामा इब्नि अबिदीन ने लिखा है "जान व माल को बचाने और अपना हक़ हासिल

करने के लिए जालिम बादशाह (हाकिम) को माल देने वाले के हक में रिशवत नहीं है। (रद्दुल मुख्तार 607/91) फिर भी अगर मुलाज़मत हासिल करना ज़रूरी न हो तो रिशवत देने से बचना चाहिए।

प्रश्नः हिन्दुस्तान या इस जैसे मुल्क में जहाँ गैर मुस्लिमों को ग़ल्बा हासिल हो और मुसलमानों की हैसियत अमली तौर पर सानवी दर्जे की हो वहां अगर कोई मुसलमान अफसर गैर मुस्लिमों से पैसे लेकर काम करे तो शरअ़न इसकी इजाज़त है, क्या यह माल हलाल है?

उत्तरः हिन्दुस्तान हो या कोई भी मुल्क किसी मुसलमान हाकिम के लिए मुस्लिम या गैर मुस्लिम उनसे रूपये लेकर काम करना जाइज़ नहीं है क्योंकि यह रिशवत है और रिश्वत गैरमुस्लिमों से भी लेना जाइज़ नहीं है।

(रद्दुल मुख्तार 169/4)

प्रश्नः जो मुसलमान निकाह के मौक़े से लड़की वालों से जहेज और नक़द रकम तिलक के नाम पर ले कर शादी करते हैं क्या शरअ़ में इसकी गुंजाइश है?

उत्तरः लड़की वालों से मुतालबा करके नक़्द रकम या जहेज़ लेना शरअ़न जाइज़ नहीं है यह रिश्वत के हुक्म में है और माले हराम है चाहे लड़की वाले इस मुतालबे पर ब खुशी दें या मजबूरन दें।

प्रश्नः कभी ज़ाती मकान या मस्जिद व मदरसे का नक़्शा मुतअ़ल्लक़ा अफसरान से मंजूर कराने में रक़म देना पड़ती है बगैर रकम दिये मस्जिद व मदरसा का नक़्शा पास नहीं हो पाता है क्या ऐसी सूरत में यह रक़म देना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः ज़ाती मकान या मस्जिद या मदरसा जिस की हर हाल में ज़रूरत होती है अगर नक़्शा मंजूर कराए बगैर तामीर मुमकिन न हो और उस मंजूरी में मजबूरन रक़म देना पड़े तो इस सूरत में शरअ़न गुनाह न होगा लेकिन लेने वाला बहर सूरत गुनहगार होगा, और दोनों कानूनी मुजरिम होंगे।

प्रश्नः बहुत से मुसलमान हुकूमत के बहुत से प्रोजेक्ट ठेके पर लेते हैं जैसे सड़क बनवाना या पुल बनवाना या हास्पिटल और स्कूल की इमारत बनवाना वगैरह इस काम में मुतअल्लिक़ा शोबे के अफसरान और आफिस के स्टाफ को रिशवत देना पड़ती है उसके बगैर काम नहीं मिल पाता है क्या इस तरह की ठेकेदारी का काम और उस ज़रीए से कमाई हासिल करना जाइज है?

उत्तरः ठेकेदारी का काम असलन जाइज़ है और इस तरह का काम करके मुनाफा कमाना भी दुरुस्त है लेकिन इसमें चूंकि रिशवत और गैर शरअ़ई लेन देन का मुआमला हुआ करता है इसलिए बेहतर तो यही है कि इस किस्म के काम से बचें लेकिन अगर कोई ठेका ले और मज़बूरी में रिशवत देना पड़े तो गुनाह न होगा मगर कानूनी जुर्म होगा। चूंकि यह काम और मुआमला दुरुस्त है इसलिए कमाई जाइज़ होगी।

(रद्दुल मुख़्तार 35/8)

प्रश्नः एक औरत की चोटी के बाल न बराबर हैं कंघी करने में खराब दिखते हैं क्या उसके लिए जाइज़ है कि एक दो अंगुल बाल काट के बाल बराबर करले?

उत्तरः एक दो अंगुल आखिर के बाल काट कर बराबर कर लेने में शरअ़न कोई गुनाह न होगा।

प्रश्नः क्या कोई औरत घर के अंदर अपने महरमों के सामने खुले सर बैठ सकती है? शरअ़न गुनाह तो न होगा?

उत्तरः घर के अन्दर किसी औरत का सिर्फ अपने महरमों के सामने खुले सर बैठे तो कोई गुनाह न होगा।

प्रश्नः शौहर अगर मजबूर करे कि तुम ब्यूटी पार्लर में मौजूदा फैशन के लिहाज़ से बालों की कटिंग कराओ तो क्या औरत के लिए शौहर का हुक्म मान कर ब्युटी पार्लर में बालों की कटिंग कराना दुरुस्त होगा?

उत्तरः ब्युटी पार्लर में हो या अपने घर पर मौजूदा फैशन के मुताबिक़ बालों की कटिंग कराना जाइज़ नहीं शौहर के इस हुक्म को न मानना चाहिए अगर शौहर का हुक्म मान कर मौजूदा फैशन के मुताबिक़ बालों की कटिंग कराएगी तो गुनहगार होगी।

प्रश्नः आज कल लड़कियाँ अपने सरके अगले हिस्से के बाल कंघी करके बराबर से कटिंग करके हुस्न व खूबसूरती दिखाने के लिए दोनों कनपटियों पर बराबर से कटिंग किये हुए बाल लटकाती हैं क्या उनका यह अमल शरअ़न ज़ाइज़ है?

उत्तरः यह नये फैशन की पैरवी है इसतरह बालों की कटिंग करने वाली लड़कियां गुनहगार हैं इस अमल से परहेज़ ज़रूरी है।

प्रश्नः किसी शख़्स ने आटा गूंधा फिर थोड़ी देर बाद उसने गुस्ल किया यह गुस्ल उसका फर्ज था। फिर उसने नमाज़ अदा कि थोड़ी देर बाद उसने देखा कि उसके नाखून पर आटा चिपका है, अब वह क्या करे?

उत्तरः आटा खुरच कर नाखून धो डाले और नमाज़ जो अदा कि है वह नहीं हुई थी उसको दोहरा ले।

प्रश्नः एक शख़्स ने आटा गूंधा, फिर वज़ू करके नमाज़ पढ़ी थोडी देर बाद देखा की उसके नाखून पर आटा चिपका हुआ है अब क्या करे?

उत्तरः आटा खुरच कर नाखून धो डाले और नमाज़ दोहरा ले।

प्रश्नः एक शख़्स ने गुस्ल या वज़ू किया उसके थोड़ी देर बाद उसे मालूम अुआ कि उसके नाखून पर आटा चिपका हुआ है तो क्या इसे छुड़ा कर फिर से गुस्ल या वज़ू करे?

उत्तरः आटा जो नाखून या जिस्म पर चिपक जाता है तो वुज़ू या गुस्ल में उसके नीचे पानी नहीं पहुंचता और वज़ू या गुस्ल नहीं होता, छुपी हुई सतह से आटा छुड़ा कर वह जगह धो डालने से वज़ू या गुस्ल मुकम्मल हो जाएगा दोहराने की ज़रूरत नहीं।

❖❖❖

प्रिय पाठकों की सेवा में

—इदारा

यह बात तो सारे इन्सान मानते हैं कि हमारी यह ज़िनदगी आरज़ी है यह एक दिन खत्म हो जाएगी। हम मुसलमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताने से इस हकीक़त से वाकिफ़ हैं कि मौत के बाद क़ब्र की जिन्दगी और फिर आखिरत की जिन्दगी या तो दुख की है या सुख की।

हर इन्सान की यह ज़रूरत भी है और चाहत भी कि यह दुनियावी जिन्दगी सुख की जिन्दगी हो। यहां मुनासिब खाना पानी मिले, मुनासिब मकान रहने को मिले, आने जाने के लिए कोई ज़रिया मिले, वह यह भी जानता है कि इस जिन्दगी का सुख दुख खुद नहीं मिल सकता इसके लिए कुछ करना पड़ता है और वह करता है, कोई खेती करता है, कोई मज़दूरी व नौकरी करता है, तिजारत करता है कोई किसी हुनर से खाता कमाता है हर हाल में कुछ न कुछ करके जिन्दगी बिताता है। दुनियावी ज़रूरतें पूरी करने के लिए इन्सान को तरगीब (प्रलोभन) देने की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन मरने के बाद की ज़िन्दगी चूंकि नज़रों से ओझल है इसलिए आम लोग उसकी फिक्र व परवाह नहीं करते।

जो लोग बरज़ख़ व आखिरत की जिन्दगी से अल्लह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताने से वाकिफ हैं उनको आख़िरत की तरफ से बे फिक्री की हालत से बहुत दुख होता है और वह इसके लिए बेचैन रहते हैं साथ ही वह आखिरत की फिक्र पैदा करने की अनथक कोशिश करते हैं।

हम को यक़ीन है कि सच्चा राही का हर पाठक भी इस सोच में रहता होगा कि सभी इन्सानों को विशेश कर अपने को और मुसलमान भाइयों को आखिरत के दुख से बचने और वहां का सुख पा लेने की फिक्र होगी और इस सिलसिले में कुछ कर भी रहे होंगे, हम अपने पाठकों से दरख़्वास्त करते हैं कि वह निम्न लिखित बातों की ओर ध्यान दें।

आप जहाँ रहते हों अपने गांव या मुहल्ले का जाइजा लें और पता लगायें कि आपके मुहल्ले या गांव के सभी बालिग मर्द और औरतें आखिरत की जिन्दगी के दुख से बचने के लिए नमाज़ पढ़ते हैं, रमजान के रोज़े रखते हैं, माल की ज़कात देते हैं, बुराइयों से बचते हैं, अगर ऐसा है तो अलहम्दुलिल्लाह लेकिन जैसा कि आप जानते हैं और न जानते हों तो जानें कि इबलीस ने कसम खाई है कि वह आदम की औलाद को आखिरत की फिक्र से बे परवाह बना कर वह उसे आखिरत का दुख (जहन्नम की आग) में पहुंचाने की कोशिश करता रहेगा। अल्लाह तआला ने भी मसलहतन उसको इसकी छूट दे दी है लेकिन साथ में यह भी फरमा

दिया कि मेरे खास बन्दों को तू बहका न पाएगा, मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे प्रिय पाठक भी अल्लाह के उन खास बन्दों में होंगे जिनको शैतान बहकाने की कोशिश ज़रूर करेगा मगर उसको नाकामी होगी।

प्रिय पाठको आपको अपने मुहल्ले और गांव में बहुत से ऐसे लोग मिलेंगे जो नमज़ा रोज़े से दूरे होंगे, आप उनसे मिलें और बड़े दुख का इजहार करते हुए उनमें आखिरत की फिक्र पैदा करें उनको नमाजी बनाएं उनमें जो बुराइयां हों उनको दूर करने की कोशिश करें, मर्दों के ज़रिए औरतों को भी इस्लाह की कोशिश करें अगर आपके घर की औरतों में यह सलाहियत हो कि वह औरतों में काम कर सकें तो परदे का लिहाज़ करते हुए वह भी मुहल्ले या गांव की औरतों में यह काम अंजाम दें। यह काम बड़ी अहमीयत रखता है मगर अल्लाह के करम से यह काम होता चला आया है तभी तो हिजाज़े मुकद्दस से निकला हुआ यह दीन आलम में फैला हुआ है और आज हम मुसलमान हैं। आज कल हमारी तब्लीगी जमाअत के ज़रिए भी यह काम अंजाम पा रहा है, और भी बाज जमाअतें यह काम अंजाम दे रही. हैं।

यह बात तो हुई बड़ों की यानी बालिगों की हम अपने पाठकों की तवज्जुह बच्चों की दीनी तालीम की तरफ ले जाना चाहते हैं।

आप देखें कि आपके गांव या मुहल्ले में बच्चों की दीनी तालीम का क्या इन्तिज़ाम है अगर आपके मुहल्ले में या गांव में मस्जिद में या अलग से बच्चों की दीनी तालीम का बन्दोबस्त है तो अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए, अगर बच्चों की दीनी तालीम का कोई इन्तिज़ाम नहीं है तो इस तरफ तवज्जुह दीजिए, अगर अल्लाह ने गाँव वालों या मुहल्ले वालों को माली वुसअ़त दी है तो जल्द गांव वालों से मकतब काइम करने का मुतालबा कीजिए और उस का खर्च गांव वालों से मुहय्या करवाइये, अगर गांव या मुहल्ले के लोग गरीब हों मुदररिस का बोझ नहीं उठा सकते तो आप खुद कमर कसें और गांव के दीन दारों को इस पर तैयार कीजिए कि रोजाना शाम को या सुबह को गांव या मुहल्ले के एक एक बच्चे को जमा करें। उनको वुज़ू करना और नमाज़ पढ़ना सिखाएं उनको उनकी मादरी ज़बान पढ़ा कर उसके ज़रिए दीन सिखाएं, कुर्आने मजीद पढ़ाएं, सूरतें याद कराएं वगैरह।

हम अपने पाठकों से यह भी अनुरोध करते हैं कि जो पाठक इस तरह का काम अपने यहां बालिगों और बच्चों के लिए कर रहे हों वह सच्चा राही को लिख भेजें उसे सच्चा राही में छापा जाएगा। इससे दूसरे पाठकों में इस तरह का काम करने का जज्बा पैदा होगा। हम अपने पाठकों से यह भी अनुरोध करते हैं कि जहां बच्चों या बालिगों को गरीबी के सबब दीनी तालीम का इन्तिजाम नहीं हो पाता है वह अपने गांव या मुहल्ले का सर्वे करके बालिग़ मुसलमानों नाबालिग

बच्चों की तादाद और वहां के मुसलमानों की हालत सच्चा राही को लिख भेजें ताकि अगर कोई अल्लाह का बन्दा अपने खर्च से वहां काम करना चाहे तो उससे काम लिया जा सके। बल्कि हम अपने सभी पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह अपने यहां मुसलमानों की तादाद लिखें और यह लिखें कि वहां बच्चों की दीनी तालीम का क्या इन्तिज़ाम है।

हम अपने पाठकों से यह भी अनुरोध करते हैं कि उनके सामने देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस का झगड़ा भी आ सकता है आप यह कहें कि हम मुसलमानों में इत्तिहाद (मेल) रहे और हम चाहते हैं कि हमारा हर बच्चा नमाज़ पढ़े, हर बच्चा कुर्आन पढ़े हर बच्चा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत से आपकी तालीमात से वाकिफ हो वह खुलफए– राशिदीन और तमाम सहाब–ए–किराम के मकाम को समझे अपने अस्वाफ को जाने और तरह की बुराइयों से दूर रहें। इख्तिलाफी माहौल मे अपनी अपनी तहकीक पर अमल करें और बाहमी इत्तिहाद बाकी रखें अलबत्ता कादियानियों से धोखा न खाएं उनसे हमारा दीनी इत्तिहाद ना मुमकिन है उन्होंने खत्मे नुबूवत के अकीदे को ठुकराया है, वह अपने को मुसलमान कहते हैं मगर उम्मत के उलमा का मुत्तफिक़ा फैसला है कि वह मुसलमान नहीं हैं, वह दीन से नावाक़िफ गरीब मुसलमानों में पहुंच कर बच्चों को मुफ्त तालीम देने की पेशकश करते हैं और हमारे भाई उन का शिकार हो जाते हैं। इस तरह दीन का जो मकसद है अल्लाह की रज़ा हासिल करना और इस दुनिया में सुकून की जिन्दगी गुज़ार कर आखिरत की जिन्दगी संवारना वह कादियानियों की पेशकश क़बूल करने से बरबाद हो जाता है। जैसे भी आप अपने बच्चों की दीनी तालीम का खुद नज्म करें और क़ादियानियों से दूर रहें। अल्लाह आपकी भी मदद फ़रमाए और हमारी भी। आमीन!

❑❑

बच्चों के पालन पोषण .....

❖ माँ को चाहिए कि बच्चे को बाप से डराती रहे।

❖ बच्चों को कोई काम छुपा कर मत करने दो, खेल हो या खाना हो या कोई और काम जो काम छुपा कर करेगा समझ जाओ की वह उसको बुरा समझता है। सो अगर वह बुरा है तो उसे छुड़ा दो और अगर अच्छा है जैसे खाना पीना तो उससे कहो सब के सामने खाये पिये।

❖ कोई काम मेहनत का उसके ज़िम्मे कर दो जिससे सेहत और हिम्मत रहे सुस्ती न आने पाये। उसे सेखी न बघारने दो यहाँ तक की हम उम्र बच्चों में बैठ अपने कपड़े मकान या खानदान, किताब, कलम आदि की तारीफ न करने पाये। कभी–कभी उसको दो चार पैसे दे दिया करो की अपनी मर्जी से खर्च करे मगर उसको यह आदत डालो की कोई चीज़ तुम छुपा कर न खरीदे। उसको खाने का तरीक़ा महफिल में उठने बैठने का तरीक़ा सिखाओ।

❖❖❖

सेहत के लिए लाभदायक है सौंफ़

—डॉ0 अनुराग श्रीवास्तव

हमारे देश में शताब्दियों से सौंफ़ का इस्तेमाल होता रहा है। अपने गुणों के कारण यह सामन्य भारतीय रसोई घरों में अपना स्थान बना चुकी है। पान के साथ भी इसका प्रयोग होता है तथा विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर भोजनोपरांत मुँह का स्वाद बदलने के लिए आमतौर पर लवंग और नारियल की कतरन के साथ सौंफ़ भी सगेसंबंधियों, मित्रमंडली तथा परिचित जन में पेश की जाती है।

आयुर्वेदज्ञों तथा प्राकृतिक चिकित्सकों के मतानुसार सौंफ़ क्षुधावर्द्धक है। जिन लोगों को खुलकर भूख नहीं लगती तथा अपच की शिकायत रहती है, उन्हें भोजन करने से लगभग आधा घण्टा पहले एक छोटी चम्मच सौंफ़ के अर्क़ का सेवन भी स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद होता है। बारिश के मौसम में जब आसमान खुला रहता है, काफ़ी उमस और गर्मी महसूस होती है। सौंफ़ गर्मी में राहत प्रदान करती है। एक छोटी चम्मच सौंफ़ लेने के पश्चात ठंडा पानी पीएं। ठंडा पानी के बाद सौंफ़ की तासीर ठंडी हो जाती है जब कि गर्म पानी के साथ सौंफ़ लेने पर इसकी तासीर भी गर्म हो जाती है।

इतना ही नहीं सौंफ़ पेचिश और पेट संबंधी अन्य शिकायतों में भी लाभकारी है। इन सामान्य बीमारियों से राहत और आराम पाने के लिए 50 ग्राम कच्ची सौंफ़ में इतनी ही मात्रा में भुनी सौंफ़ मिला कर इसे महीन कर चूर्ण बना लें। इसके बाद प्रातः काल तथा सायंकाल एक छोटी चम्मच की मात्रा में नियमित रूप से सेवन करने से लाभ होता है। डाइटीशियनों के अनुसार सौंफ़ के बराबर सेवन से व्यक्ति का हाज़मा दुरुस्त रहता है।

कलौंजी-

कहा जाता है कि कलौंजी मौत के सिवा हर मरज़ की दवा है। मगर उसका इस्तेमाल हर एक को मालूम नहीं। हकीमों ने लिखा है कि कलौंजी पेट की रियाह (हवा) को ख़त्म कर देती है उसको तोड देती है उसको बाहर निकाल देती है। कलौंजी आसाब (पट्ढों) को ताक़त देती है रुके हुए हैज़ को जारी करती है। पेट के रियाही दर्द को दूर करती है। कलौंजी बड़ी आंत के दर्द में बहुत फाइदा करती है, फालिज में भी फाइदा करती है दिमाग़ को ताक़त देती है नफ़्ख़ (हवा से पेट फूलना) में फाइदा देती है हाथों की कँपकपी में भी फ़ाइदा करती है।

पेट की तमाम तकलीफ़ों में दो ग्राम कलौंजी का सफ़ूफ़ (चूर्ण) पानी के साथ लेना चाहिए। रुके हुए हैज़ में अध कुटी कलौंजी पानी में उबाल कर पिलाएं। पट्ढों की ताक़त के लिए दो ग्राम कलौंजी का चूर्ण शहद में मिलाकर रोज़ाना सवेरे नहार मुंह चाटें। माजूने कलकलांज (जो कलौंजी से बनती है) इस्तिसक़ा (प्यास का रोग) और कौलंज में मुफ़ीद है।

❖❖❖

लतीफ़े

नोटः ईद की खुशी में बच्चों के लिए कुछ लतीफ़े लिखे जाते हैं–

❖ जज ने चोर से कहा कि तुम पंद्रहवीं बार अदालत में लाए गये हो इसलिए तुम पर पंचास हज़ार का जुर्माना किया जाता है।

चोर ने कहाः हुजूर! बराबर आने वाले ग्राहक के साथ कुछ तो रिआयत होनी चाहिए।

❖ उस्ताद ने तालिब इल्मों से कहा "भाई चारह" को जुम्ले में इस्तेमाल करो।

एक तालिबे इल्म ने कहाः जब मैंने दूध वाले से कहा भाई दूध मंहगा क्यों देते हो? उसने जवाब दियाः "भाई चारा" मंहगा हो गया है।

❖ **मोटे आदमी ने दुब्ले आदमी से कहाः** तुम को देख कर ऐसा लगता है कि जैसे दुनिया में क़हत (सूखा) पड़ गया हो।

दुब्ले आदमी ने कहाः और तुमको देख कर लगता है कि कहत तुम्हारी वजह से पड़ गया हो।

❖ **शौहर ने बीवी से कहाः** तुमने लोगों से किस तरह कहा कि मैं बहुत अच्छा बावर्ची हूँ मुझे तो अण्डा तलना भी नहीं आता।

बीबी ने जवाब दियाः हाँ मैं जानती हूँ कि आप को अण्डा तलना भी नहींआता लेकिन मुझे आपको पसन्द करने का कोई न कोई सबब बताना ही था।

❖ हसन ने अपने दोस्त फहीम से कहाः अगर मैं "वक़्त" होता तो लोग मेरी कितनी इज़्ज़त करते।

फहीम ने फौरन कहाः जी नहीं तब लोग तुम्हें देख कर डर जाते।

हसन ने कहा वह क्यों?

फहीम ने जवाब दियाः लोग तुम्हें देख कर कहते वह देखो बुरा वक़्त आ रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

संघ के दस नेताओं के खिलाफ आतंकी सुबूत-

केन्द्रीय गृह मंत्री का समर्थन करते हुए गृह सचिव आर.के. सिंह ने कहा कि आतंकी वारदातों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दस नेताओं के खिलाफ पुख़्ता सुबूत और गवाह हैं।

संवाददाताओं से बातचीत में सिंन ने कहा कि समझौता एक्सप्रेस में विस्फोट, मक्का मस्जिद विस्फोट एवं दरगाह शरीफ विस्फोट की घटनाओं में आरएसएस से जुड़े लोग लिप्त थे। जांच एजेंसियों को ऐसे दस लोगों के खिलाफ सुबूत मिले हैं। इनमें से ज़्यादातर लोग गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

सिंह का बयान जांच एजेंसियों की रिपोर्ट पर आधारित है। सिंह ने इन सभी दस लोगों के नाम गिनाए। सिंह के अनुसार समझौता एवं अजमेर ब्लास्ट में शामिल सुनील जोशी (अब मृत) आरएसएस कार्यकर्ता था। वह 1990 से 2003 के बीच में देवास एवं मऊ में संघ से जुड़ा रहा। संदीप डांगे समझौता, मक्का मस्जिद और अजमेर तीनों विस्फोटों में शामिल था। वह मऊ, इंदौर, उत्तर काशी एवं शाजापुर में 1990—2006 के बीच आरएसएस का प्रचारक रहा।

देवगढ़ के लोकेश शर्मा को समझौता एवं मक्का मस्जिद विस्फोट में पकड़ा गया। इन्हीं मामलों में स्वामी असीमानंद गिरफ्तार हुए जो डांग में आरएसएस एवं वनवासी कल्याण परिषद से जुड़े थे। इन्हीं मामलों में राजेन्द्र उर्फ समुंदर को भी पकड़ा गया था जो संघ में वर्ग विस्तारक था। अजमेर दरगाह विस्फोट में मुकेश वासानी को पकड़ा गया था जो गोधरा में आरएसएस का कार्यकर्ता था। मऊ एवं इंदौर में आरएसएस के प्रचारक रहे देवेन्द्र गुप्ता को मक्का मस्जिद विस्फोट में गिरफ्तार किया गया। जबकि प्रचारक चंद्रशेखर लेवे मक्का मस्जिद, कमल चौहान को समझौता एवं मक्का मस्जिद तथा रामजी कालसंगरा को समझौता एवं मक्का मस्जिद विस्फोटों में गिरफ्तार किया गया था। ये सभी आरएसएस से जुड़े रहे थे।

पाक शहर में रुका पोलियो अभियान-

पाकिसन में पेशावर के उत्तर पश्चिम शहर में पोलियो की दवा पिलाने वाले दो युवा कर्मचारियों की हत्या के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पोलियो उन्मूलन अभियान पर रोक लगा दी है। इस शहर में 18 और 20 वर्षीय दो पोलियो कार्यकर्ताओं की गोलीबारी में मौत हो गई है। अभी तक किसी संगठन ने इसकी ज़िम्मेदारी नहीं ली है। हालांकि तालिबान पोलियो अभियान को पश्चिमी देशों की साजिश बाताता है।

❖❖❖